वक्तव्य ।

प्रिय पाठक ! यह पुस्तक 'इसलाम का फोटो' बा० धर्मपाल बी० ए० (जो पहले अबदुलगफूर के नाम से प्रसिद्ध थे) लिखित नखले इसलाम का हिन्दी अनुवाद है । इसमें इसलाम का जो फोटो खींचा गया है वह उसी के ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर । हम नहीं चाहते कि किसी के मुर्दों का चाहे वे कैसेही ज़ालिम, नफ्स परस्त और शैतान हुवे हों कफन उघाड़ कर उन को बेपरदा किया जाय, पर जबतक इसलाम का इतिहास और उसके प्रवर्तकोंके खूनी कारनामे उसमें लिखे हुवे मौजूद हैं, हम क्या कोई भी दुनियां की नजरों से उसकी खौफ़नाक तसवीर को ओझल नहीं करसकता ।

हमारे मुसलमान भाई जो इसलामका बड़ा अभिमान करते हैं, जरा आँखें खोलकर उसकी अन्दरूनी तसवीर का मुताला करें । निष्पक्ष होकर जो लोग इस पुस्तक को देखेंगे, उनपर इसलाम का सारा रहस्य प्रकट होजायगा ! इसीलिये हम इसे संशोधन के पश्चात् दुबारा पाठकों की भेंट करते हैं ।

ओ३म्

विप्लता

अर्थात्

इसलाम का फ़ोटो

पहिला खण्ड
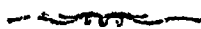
कोई देश या जाति एकही कारण से ऊँची या नीची नहीं होती उसके घटने और बढ़ने के बहुत से सबब होते हैं। यह घटने और बढ़ने के सबब एक हिंडोले की तरह होतेहैं, जिसका एक हिस्सा एक समयमें जमीनसे छुआ रहताहै और कभी २ वही नीचे का हिस्सा सबसे ऊँचा होजाता है। दुनियां में कितने ही देश उठे और गिरगये, कितनीही जातियां बनीं और बिगड़गईं। कितने ही राज क़ायम हुए और उजड़ गये। पत्थर के थंभे, बुर्ज और दीवारों के सिवाय कुछ बाक़ी नहीं रहा।

चीन की बड़ी लम्बी दीवार एक बड़े राज का होना बतारही है। मिसर के ऊँचे बुर्ज मिसर की उन्नति के चिन्ह हैं। सिकन्दरके कामों से अभी तक यूनानी राज बड़ाई पारहा है।

इङ्गलिस्तानसे लेकर हिन्दुस्तानके उत्तर तक, और रूस के उत्तर से अरबके दक्षिणतक के आदमियोंको रूमकी सेना की याद बाक़ी है। कारथेज के खंडहर, यूनानियों के सामने एक बड़े भारी राज की यादगार हैं। दजला और फ़रात नौशेरवांके राजको याद दिलाते हैं। कहाँ तक कहूँ, मिसर, यूनान, चीन, रूम, कार्थेज, फ़ारस और मेदिया सबके सब अपने २ बढ़ने और घटने को बतारहे हैं। मगर उन सब के दादा, सबके शिरोमणि, सबसे बड़े और सबके जन्मदाता बूढ़े भारत की बुरी दशापर हिमालय पहाड़का रोते २ सिर सुफ़ैद होगया। लेकिन उसको इतना दुःख है कि वह दुःख घटताही नहीं उसके दुःखकी आगको गङ्गा, यमुना, सरस्वती और ब्रह्मपुत्र सब मिलकर नहीं बुझा सकतीं। लेकिन इतना दुःख होनेपर भी हिमालय चुप है। अगर हिमालय के ज़ुबान होती, तो आज कम से कम वह अपना पुराना इतिहास तो सुनादेता। भारत में कौन२ से ऋषि मुनि हुए, कौन २ से चक्रवर्ती राजे हुए, यह कैसा खुशहाल था, कैसी २ लड़ाइयां इसमें हुईं, किस२ ने इस को लूटा और इसकी सन्तान क्या थी और क्या

होगई ?। उसके ज़ुबान होती तो यह सब बातें सुना देता।

हिमालय का सिर दुनियां में सब से ऊंचा है। वह तमाम दुनियां को एकही दृष्टि से देख रहा है, और दुनियाँ की इस समय की गिरी हुई हालत को देखकर रोरहा है। इसके आंसू भारतवर्ष पर गिर रहे हैं क्यों कि भारतवर्ष इस की तलैटी में बसाहुआ है। हमें भरोसा है कि एकदिन यह भारत फिर उठेगा, और वह हिमालय की चोटी से भी ज्यादा ऊंचा उठकर संसार में अमन फैलायेगा।

इतिहास की शक्ति।

हम भविष्यवक्ता बनना नहीं चाहते, न हम आगे की बात बताने वाले हैं क्योंकि हम इस बात को मानते ही नहीं। हां भारत के पास एक ऐसी अच्छी चीज़ है जो लाखों और करोड़ों वर्षों की अगली पिछली बातें बता सकती है-वह भारत का अपना इतिहास है। इसी अच्छी चीज़ या इतिहास के भरोसे हम कह सकते हैं कि भारत फिर हिमालय से ऊँचा उठेगा और संसार में शान्ति फैलायेगा। वह देश जिसका अपना इतिहास नहीं है वह कभी बड़ाई नहीं पा सकता। इतिहासही एक ऐसी शक्ति है जो मुर्दों में भी जान डालदेतीहै। किसी देशकी दौलत छिन जानेसे इतना नुकसान नहीं होता जितना उसका इतिहास मिटजानेसे होताहै। मातायें

बच्चोंको कहानी सुनाया करती हैं कि उस आदमी ने मरी हुई हड्डियों पर अमृत छिड़का और वह जी उठी। ये कहानियां तो मनघड़ंत होती हैं क्योंकि ऐसा अमृत कहीं नहीं मिलता। हां मुरदा जातियों और गिरे हुए देशको इतिहास ही फिर उठाने के लिये अमृत का काम देता है: इस शक्ति को सब संसार मानता है। बहुत दिन नहीं हुए कि लन्दन के कुछ समाचार पत्रों में यह चर्चा छिड़ीथी कि गोरी जातियों का अन्त में क्या हाल होगा अर्थात् उनकी आबादी बढ़तीजाती है; उनके रहने को इतनी ज़मीन कहांसे आवेगी? चर्चा छेड़ने वालों ने सारी दुनियांपर निगाह दौड़ाई। उनको एशिया भरमें कोई जगह ख़ाली न मिली जहां कि वे रहते। क्योंकि यह बात सब ने मानली कि एशियाके सब देश अपना २ इतिहास रखते हैं। चाहे यह इतिहास बुझे हुए ज्वालामुखी पहाड़ की तरह हो न जाने कब जल उठें। इसलिये इसके पहलूमें बसनेमें बड़ा खटका है। अन्तमें उनको आस्ट्रेलियाका बड़ा मैदान दिखाई दिया जहांके जंगली बाशिन्दे थोड़ेसेही हैं और उनका अपना कोई इतिहासभी नहीं है। इनको अमरीका के जंगल दिखाई दिये, जहां कोई ऐसा ज्वालामुखी पहाड़ नहीं है। इससेभी बड़ा उनको अफ़रीका देश दिखाई दिया जो उत्तर के थोड़े से भाग को छोड़कर सबका सब ख़ाली पड़ाहै। चाहे वह आबादहै, लेकिन ऐसे लोगोंसे आबाद है जिनका अपना कोई इतिहास नहीं; और वे

कभी सिर नहीं उठा सकते। बहस करनेवालोंने इन देशोंको गोरी जाति के लिये बहुत अच्छा पाया और यह ठानली कि एशियाके रहने वाले यहां न आने पावें क्योंकि एशिया यूरुपका शत्रु है। इससे जाना जाता है कि इतिहास एक बड़ी शक्ति है जिससे बड़े २ राज्य कांप जाते हैं। इस शक्ति की बड़ाई केवल हम लोग या योरुप के लोग ही नहीं मानते बल्कि पुराने समयसे इस की बड़ाई चली आरही है। यही सबब है, जब कभी किसी जंगली जाति ने ऊंची जातिको किसी न किसी तरह दबालिया तो उसने यही यत्न किया कि उस के इतिहास को मिटादे जिससे कि वह फिर दुबारा सिर उठानेके लायकही न रहे। इतिहास पुकार२ कर कहरहा है कि इसको मिटाने के जगह २ यत्न किये गये। मुसलमानों ने मिसरको जीता सिकन्दरिया के पुस्तकालयको जलाकर खाक करदिया, जिसमें लाखों बड़ी२ अच्छी किताबें इकट्ठी की गई थीं। मुसलमानी मत एक जंगली देश में पैदा हुआ, जिसने विद्याकी बड़ाई को जानाही नहीं। जिसका अगर कोई इतिहास था भी तो केवल भेड़ बकरी और ऊंट चराने वालों की कुछ कहानियां थीं। यही सबब था कि वे विद्या और हुनरकी कद्रही नहीं जानते थे। इसीलिये ये जहां २ गये वहां २ उन्होंने किताबों को मिटाना शुरू करदिया। उनके विचार में कुरान के सिवाय सब किताबें बेकार

थीं। यदि उनकी कुछ आवश्यकता थी तो इसलिये कि उनसे चूल्हा गरम किया जावे। मुसलमानों के सब्ज़ क़दमने आर्यावर्त की सब्ज़ी कोभी चाट लिया। जो हाल कि उन्होंने सिकन्दरिया के पुस्तकालय का कियाथा वही उन्होंने यहां की पुस्तकों का भी किया। जगह २ पुस्तकालय जलाये गये। रायबहादुर शरच्चन्द्रदास साहब आर्यावर्त के पुराने महाविद्यालयों का ज़िकर करते हुए लिखते हैं कि बुद्धगया में एक नौ मंज़िला पुस्तकालय था। इसी तरह का नौमंजिला पुस्तकालय नालन्दह में था, जिस में बुद्ध मत की किताबों के सिवाय पुराने समय की और अच्छी अच्छी पुस्तकें थीं। इन दोनों पुस्तकालयों से बढ़कर उदन्तपुरी का पुस्तकालय था। परन्तु सन् १२१२ ई० में बख़्तयार ख़िलजी के समय में, जब कि उस के जरनैल मुहम्मद बिन सामने उस इलाके को जीता, तो उसने आज्ञा दी कि इन सब किताबों को जला दिया जावे। भारतकी लाखों और करोड़ों वर्षकी कमाई इस महा अधम ने एक क्षण में जला डाली। कौन जान सकता है कि इन पुस्तकालयों में कैसे कैसे रत्न भरे थे। शोक! भारत अपने पुरुषाओं की सम्पत्ति को खोबैठा और एक दुनिया इस अमूल्य कोष से फ़ायदा उठाने से महरूम रहगई। इसीतरह सुलतान अलाउद्दीन ख़िलजी ने अन्हलबाड़ा पट्टन का विख्यात पुस्तकालय भी जला-डाला। तारीख़ फ़ीरोजशाही में लिखा है कि, फ़ीरोज़-

शाह तुगलक ने कोहाने में संस्कृत पुस्तकों का एक बड़ा पुस्तकालय जलवा दिया। सैयद गुलाम हुसैनने अपनी मशहूर तवारीख सैरुलमुताख्वरीन की जिल्द पहिली सुफ़ा १४० में लिखा है कि औरङ्गज़ेब जो सिकन्दर सानी (दूसरा सिकन्दर) भी कहाजाता है,एक मुसलमान है;जहां और जब कभी उसको हिन्दुओं की किताबें मिलती हैं;जलवा देता है (१)। ऐसी भयानक फूंका-फाकी में भारत का इतिहास कैसे बच सकता था। इस समय में जब कि भारत में इतिहास की कमी देखी जाती है तो पश्चिम के लोग यही कहते हैं कि भारत का कोई अपना इतिहास नहीं था और यहाँ के निवासी भी आस्ट्रेलिया के जंगली और अफ़रीका के हवशियों की ही तरह थे; इतिहास का जाननेवाला मशहूर इतिहास लेखक फ़रिश्ता भी यह लिखने से नहीं रुकसका कि, भारतवासी इतिहास लिखना बिलकुल नहीं जानते थे। मिष्टर डव अपनी हिष्ट्रीआव इण्डिया में और मिष्टर विलसन अपनी अङ्गरेज़ी में अनुवाद की हुई राजतरङ्गिणी की भूमिकामें इस बातका खण्डन करते हैं कि, 'भारतवर्ष में कोई इतिहास की पुस्तक नहीं थी'। करनल टाड साहब, मुसलमानों के हाथ से पुस्तकालयों की तबाही का ज़िकर करते हुए लिखते हैं

१-हम हवालों के लिये इस मज़मून में मिष्टर हरबिलास शारदा की किताब हिन्दू सुपीरियारिटी से काम ले रहे हैं।

कि, " अगर हिन्दुस्थान में इतिहास की किताब न थी तो अब्दुलफ़ज़ल ने इतिहास लिखने के लिये कहाँ से सामग्री इकट्ठी की ? ख़ैर कुछहो, भारत अपना एक बड़ा इतिहास रखता था। चाहे इस इतिहास को मिटाने के लिये यत्न किये गये और किये जारहे हैं। मुसलमानों ने अपने राजमें जो कुछ बुरा बर्ताव किताबों के साथ करना चाहा वह किया; चाहे आज कल ऐसी बातें नहीं कीजातीं, फिरभी यत्न यही रहता है कि भारत का प्राचीन इतिहास छुपाही पड़ा रहे। भारतवासी इससे बेख़बरही रहें तो अच्छा है। यही सबब है कि हमारे स्कूलों और कालिजों में जो इतिहास पढ़ाये जाते हैं, उनमें पहली बातों को ऐसा घुमाघुमू कर बताया है कि जिससे यही जँचे कि, भारत के रहने वाले बिलकुल जंगली थे, जो गाय भेड़ चराया करते थे, कुछ बुरी भली खेती भी कर लिया करते थे, वक़पर बछड़ों को दाग़ देते थे, गोफ़न फिराना और फन्दा डालना भी जानते थे। बस भारत का इतिहास ख़तम होगया। हम यह नहीं कहते कि भारत को लायक बनाने का दावा करने वाले किसी बद-नीयती से इसके प्राचीन इतिहास की यूं खिल्ली उड़ा रहे हैं। हम यह कहते हैं कि इसतरहके इतिहास को पढ़कर, भारत के बच्चे प्राचीन गौरव को भूल जायेंगे; ऐसा इतिहास पढ़ाने से तो न पढ़ाना ही अच्छा है।

इतिहासकी ज़रूरत

भारत के लिये ऐसे इतिहास की जरूरत नहीं है, जो बताता हो कि भारतवासी हमेशासे ही गिरे चले आते हैं। बल्कि उन बातों को बताने की ज़रूरत है कि, भारतवर्ष हिन्दुस्तान बनने से पहिले क्या था ? भारत वासी हमेशासे हिन्दूही चले आये हैं, या कभी इनमें आर्यत्व भी था ? हिन्दू मौजूदा हालत से उठ सकते हैं या नहीं हिन्दुओं की इस समय की निर्बलता कैसे दूर होसकती है ? प्राचीन समय के फिर वापिस लाने से या केवल कुछ थोड़ा सा सुधार कर देनेसे भारत उठ सकता है ? यह थोड़े से प्रश्न हैं, जिनका उत्तर देना इतिहास का काम है। इसमें सन्देह नहीं कि पश्चिमी विचार के फैलजाने से एक हलचल मच गई है। इस हलचल की पहिली मंज़िल ने ग़ज़ब ढाया। क्योंकि गवर्नमेंट ने अन्तिम फैसला कर लिया था और उस फैसले की जड़ में लार्ड मैकाले की बुद्धि काम कर रही थी कि, हिन्दुस्तानियों को पश्चिमी साइंस पढ़ायी जानी चाहिये और उस पढ़ाईके लिये अच्छी मीडियम (शैली) अंगरेज़ी भाषाही हो सकती है। क्योंकि मैकाले के लिये संस्कृत भाषा ऐसी अधूरी और उसका साहित्य ऐसा तुच्छ था कि, वह अंगरेज़ी भाषाकी किसी तरह बराबरी नहीं कर सकता था। इस फैसले पर चलतेही भारतवासी न केवल भारतवर्षके लिये

ग़ैर बनगये बल्कि धड़ाधड़ ईसाई होने लगे क्योंकि जो साहित्य इनको पढ़ाया जाता था वह अंगरेज़ी भाषामें था। अंगरेज़ी भाषामें कोई बुराई नहीं थी, बल्कि बुराई की जड़ इस लिटरेचर में भरे हुए ख़यालात थे, । जिनकी तह में ईसाईमतका छुपा हुआ हाथ काम कर रहा था। भारतके विषयमें जो कुछ इतिहास की शिक्षा दीजाती थी, उसके लिखनेवाले यातो कट्टर ईसाई थे, या वे उन ईसाइयों की किताबों से मदद लेते थे जिन में प्रायः भारत के प्राचीन इतिहास के विषय में उन्होंनें अपनी राय लिखी है ईसाईयों को यह कब अच्छा लगता था कि वे बाइबिल से अच्छे लिटरेचर का पता लगने दें। इसलिये उन्होंनें वेद, उपनिषद और शास्त्रों के विषय में यही राय दी कि इनमें बच्चों कैसे विचारहैं और यह जंगलियों के बनाये हुए हैं; जोकि नदियोंके किनारे रहते और भेड़ बकरी चराया करते थे, जिनका कोई इतिहास नहीं था। स्कूलों में ऐसी पढ़ाईका यह फल हुआ कि भारतके होनहार युवा भारत की हरएक बातको तुच्छ दृष्टि से देखने लगे। यहां तक कि राजा राममोहनराय साहब और उनके अनुयायी केशवचन्द्र सैन साहब आदि ने हिन्दुस्तान के धर्मपर ईसाईमत और इस्लाम का पैबन्द लगाने का यत्न किया। गो पैबन्द लगा दिया गया, पर उसकी शाखें हरी भरी नहीं हुई। फिर भी ब्राह्म समाज ने सुधार के सहारे से

भारत के कल्याण का मार्ग ढूंढनेका यत्न किया, पुनरुद्धार उनके विचारके विरुद्ध था। क्योंकि पश्चिमी विद्वानोंके हाथ से लिखी हुई किताबें पढ़ कर और उनमें प्राचीन समय के बारेमें कुछ भी न लिखा देखकर इन लोगों ने पुराने समयको फिर लौटा लानेका ख्याल बिलकुल छोड़ दिया। इसका फल यह हुआ कि सारा बंगाल पश्चिमी विचारों, पोशाकों और चीज़ोंसे सिरसे पैरतक डूब गया और बजाय हिन्दुस्तान का हिस्सा मालूम होने के इङ्गलिस्तान का हिस्सा बन गया। लेकिन उसमें जल्दी ही परिवर्त्तन होनेवाला था। क्योंकि इधर पञ्जाब, बम्बई और युक्तप्रदेश में इस बात पर बल दिया जाने लगा कि सुधार की आवश्यकता नहीं किन्तु पुनरुद्धार की ज़रूरतहै इस लिये कि हमारा पुराना इतिहास बहुतही उत्तम है और ऐसा है कि हम उसी के पीछे चलें। हमारे प्राचीन ग्रन्थ ऐसे नहीं हैं जैसे पक्षपाती ईसाई बतारहे हैं, परन्तु उनमें ऐसी २ विद्याकी बातें भरी हैं कि जिन में ईसाई मत या मुसलमानो का पैबंद लगाया ही नहीं जासकता। वह प्रकाश से भरा हुआ है। ईसाई और मुसलमान उससे बहुत कुछ सीख सकते हैं। बस अगर ज़रूरत है तो इस बातकी कि हम पुराने समय को फिर लेआवें, और पुरानी बड़ाई पर विचार करें। इस बातकी खोज करने वाला कौन था यह बताने की

आवश्यकता नहीं, क्योंकि दुनियां उसके नामको जानती ही है। उधर जबकि बङ्गाल में, जो सब से पहिले पश्चिमी विचार और सभ्यतामें मतवाला होगया था, सुधार की पुकार उठ रही थी, तो दूसरी तर्फ पुनरुद्धार का यत्न किया जारहा था। २५ वर्ष के बाद पुनरुद्धार की जीतहुई अर्थात् यही राय ठहरी कि प्राचीन इतिहास को ढूंढ कर उस पर चला जाय और पुराने समयको फिर वापिस लाया जावे। दुनियां को दिखा दिया जावे कि भारत अपनी आज़ादी के समय क्या था और अब क्या होगया ? भारत क्यों गिरा, और वह अब कैसे उठेगा ? मनुष्य अपनी बीती हुई बातों को सामने रखकर फिर मुस्तैद होसकता है। वह अपने में एक नया जीवन पालेता है। फिर इस बहुत बड़े बल्कि सब देशों के शिरोमणि देश की राम कहानी एक मज़ेदार कहानी क्यों न होगी। प्राचीन इतिहास पर निगाह डालने से पहिले हम उन लोगों का हाल कहदें; जो अपनी गिरी हुई हालत में भी ऐसे हैं कि जिनको तमाम दुनिया बड़ाई देरही है। इसके लिये इससे बढ़कर और क्या बात होसकती है, कि हम उन्हीं लोगों के वाक्य लिखदें जो उन्होंने भारत और उसमें रहनेवालों के बारे में लिखे हैं। जिस से इस गिरे हुए ज़माने मे भी प्राचीन आर्यत्व का पता लगजावे।

भारतवासी गैरों की नज़रमें।
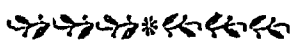
स्ट्रैबो का बयान है कि भारतवासी ऐसे ईमानदार हैं कि, नतो वे घरोंमें ताले लगाते हैं और न वे लेनदेन में तमस्सुकों को काममें लाते हैं।" अबभी जहां मौजूदा सभ्यता नहीं पहुंची है वहां अबतक भी पुरानी ईमानदारी मौजूद है। हिन्दुस्तानी शहर चाहे इस बीमारी में फंस चुकेहों, परन्तु फिरभी बहुतसी जगहोंमें पुरानी ईमानदारी और विश्वास मौजूदहै। यहां पर हमको एक आप बीती कहानी याद आईहै जिसे हम यहां पर बयान करतेहैं। जब हम गतजौलाई मासमें अलमोड़े पहुंचे तो हमको एक बँगलेमें ठहरनापड़ा,बँगलेमें पहिलेसेही एक बँगाली बाबू रहतेथे बाहर जातेसमय बाबू बोले कि बंगले में सब सामान मौजूद है परन्तु ताला लगाने के लिये क़िवाड़ों में ज़ञ्जीर नहीं है। आप सैर को जावें तो खुले किवाड़ चलेजावें। तहक़ीक़ करने से मालूम हुआ कि उधर के पहाड़ी ईमानदार होतेहैं, वे चोरी करना जानतेही नहीं इसलिये तालेकी वहां ज़रूरत नहीं। जितने ऊपर पहाड़ पर चढ़िये उतनीही ईमानदारी ज़ियादा मालूम होगी जहां पर कि लियाक़तदार आदमियों का क़दम नहीं पहुंचा है। लेकिन ज्यों २ मैदान में आइये उसने ही इसके विरुद्ध चोरी बदमाशी

वग़ैरह ज़ियादा पायेंगे। भारतको किस बात ने गिराया, इस बात का ज़िकर हम आगे चलकर करेंगे। इस समय हम प्राचीन लोगों के बारेमें निष्पक्ष इतिहास लिखने वालों की रायही पेश करते चलेजायेंगे। एपिक्टीटसका शिष्य एरियन मसीह को दूसरी शताब्दी में भारतवासियों का ज़िकर करते हुए लिखता है कि—"भारतवासियों में कोई भी झूंठ नहीं बोलता"। अगर हम इस रायको बिलकुल सच न मानें तो भी यह तो ज़रूर मानना पड़ेगा कि इस समय की सभ्यता के छल और कपट से वे बिलकुल ख़ाली थे।

ह्यूनत्सांग चीनका यात्री अपनी यात्रा की पुस्तक में लिखताहै कि-"भारतवासी अपनी ईमानदारी और साफ़दिली में मशहूर हैं, वह किसी के मालको ज़बरदस्ती छीनना बुरा समझते हैं और हर जगह इनसाफ़ ही करते हैं" इसी तरह खांगताई, जो कि चीनकी तरफ़से स्याम के राजा के दरबारमें दूत नियत होकर आयाथा, उसने लौटकर यह कहा कि "भारतवासीकी बड़े ईमानदार और साफ़ कहनेवाले हैं"। यह मसीह की दूसरी सदी का ज़िकर है। यद्यपि भारत इससमय बहुत ही गिर चुका था, परन्तु फिरभी उसमें कुछ आर्यत्व बाक़ी था। ईसाकी चौथी सदी तक जबतक कि मुसलमानोंने अपना बुरा असर इस तरफ़ नहीं डाला था, भारत की हालत बहुत कुछ अच्छी थी।

फ़ायरजारडेल लिखता है कि 'भारतवासी बात के बड़े सच्चे और न्याय के पक्के हैं"। छठी शताब्दी में फ़ोटो, शाह चीन की तरफ़ से हिन्दुस्तान में एलची बनकरी आया था। इसने लिखा है कि 'भारतवासी कौल और इक़रार के बड़े पक्के हैं"। और लीसी ने ग्यारहवीं सदी में जो जुग़राफ़िया तैयार किया है, उसमें भारत-वासियों का ज़िकर करते हुए, उसने लिखा है कि-"भारतवासी स्वभाव से ही न्यायप्रिय हैं। वे किस तरह भी न्याय को नहीं छोड़ते। वे बात के कौल के पक्के हैं और किसी तरह प्रतिज्ञा भङ्ग नहीं करते। वे न्याय के लिये प्रसिद्ध हैं हरएक देश के लोग उनकी तरफ़ दौड़े चले आते हैं"। मैक्समूलर साहब 'इण्डिया एंड व्हाट कैन इट टीच अस" नाम की किताब में शम-शुद्दीन अबू अबदुल्ला के वाक्य को नक़ल करते हैं कि भारतवासी रेत के परमाणुओं की तरह बेशुमार हैं, उनमें धोखा और अन्याय नाम को नहीं। उनको न जीने की परवा न मरने का डर है। मारकोपोलो तेरह-वीं सदी का प्रसिद्धयात्री भी अपनी यात्रा की पुस्तक में, लिखता है कि-"भारतवर्ष के ब्राह्मण संसार भर में सबसे बढ़िया सौदागर हैं। वह बड़े ही सच्च बोलने वाले हैं। दुनिया में किसी चीज़ के बदले वे झूठ बोलना नहीं चाहते"। (मार्कोपोलो ने भारत के बनियों को ब्राह्मण समझा था)। कमालुद्दीन अबदुर्रज्ज़ाक, समरकन्दी, जोकि ख़ाक़ान की ओर से महाराजा काली-

कर व बीजानगर के दरबार में, चौदहवीं सदी में बतौर एलची के आया था इसका भी यही बयान है कि—"हिन्दुस्तान के व्यापारी लोग बड़े ही भरोसे के और सच बोलनेवाले हैं" अबुलफ़ज़ल का बयान है कि—"हिन्दू सत्यप्रिय और अपने तमाम कामों में विश्वास करने योग्य हैं"।

मिस्टर मिल हिस्ट्री आव इण्डिया में जानमैलकम के हवाले से लिखते हैं कि—"भारतवासी सच्चाई के लिये ऐसे ही विख्यात हैं जैसे कि वे अपनी वीरताके लिये"। मैक्समूलर साहब करनल स्लीमैनके पते से जोकि बहुत दिनोंतक भारत में रहे हैं, लिखते हैं कि "एक भी गाँव के आदमी बिलकुल झूंठ नहीं बोलते, मेरे पास बहुत से मुक़द्दमात आये जिनमें से कि ज़रासा झूंठ बोल देनेसे, घर बार और तमाम जायदाद बच सकती थी, मगर दोनों ने झूंठ बोल देने से बिलकुल इंकार कर दिया"। मैक्समूलर साहब पूंछते हैं कि क्या अंगरेज़ी जज भी कभी ऐसा कर सकते हैं? इसका उत्तर विशेष कर 'नहीं' होगा। मैक्समूलर अपनी इसी किताब में लिखते हैं कि पुराने या नये समय में जितने भी यात्री हिन्दुस्तान में गये उन सभोंने इस बातकी गवाही दी है कि भारतवासी बड़े ही सच्च बोलने वाले और ईमानदार हैं। उनमें से किसी ने भी उनको झूंठा नहीं बतलाया। यह राय केवल पुराने यात्रियों ही की नहीं है, बल्कि आजकल के भी हमारे देशके जितने यात्री हिन्दु-

स्तान गये हैं उन की भी यही राय है कि भारतवासियों में कोई न कोई बात ऐसी ज़रूर है कि जिससे उनका यह जातीय गुण हो गया है। इसके विरुद्ध विलायती यात्रियों की फ्रांस की सैर का हाल सुनिये तो आपको मालूम होजायगा कि अंगरेज़ फ्रांस के रहने वालों की ईमानदारी और सच्चाई का बहुत कम ज़िकर करते हैं इसी तरह फ्रांसवाले भी अंगरेज़ों पर कभी २ धोकेबाज़ी का ताना मारा करते हैं। शायद मैक्समूलर की आत्मा स्वर्ग में बहुत ही घबड़ाई होगी जबकि उन्होंने लार्ड कर्ज़न को सारे हिन्दुस्तान को झूंठा बताते सुना होगा। भारतवासी न केवल अपने सच बोलने हीके लिये प्रसिद्ध थे किन्तु उनमें मनुष्यता के वे सब गुण थे जो मुसलमान और ईसाइयों के साथ मिलने से बहुत कुछ कम होगये हैं। परन्तु फिरभी बहुत कुछ बाक़ी है और ज्याद: तर वहाँ बाक़ी हैं जहाँपर कि मुसलमान लोग नहीं पहुंचे हैं।

भारतवासी अपनी स्त्रियों का बड़ा मान करते थे। मैगस्थनीज़ के कहने के अनुसार, स्त्रियें मर्दों की दृष्टि में बहुत आदरणीय थीं। वह ज़हरीला परदा, जोकि मुसलमानों के अन्याय के समय में भारत में जारी होगया उस समय बिलकुल नहीं था यह केवल मुसलमानों की शरारत का फल है, जोकि अबतक चला जाता है। अबभी बहुत से पहाड़ी देशों में और दक्षिण के उन देशों में जहाँ मुसलमानों का गुज़र नहीं हुआ है

स्त्रियों में ऐसा परदा नहीं है जैसा कि पञ्जाब और युक्तप्रदेशमें है। भारतवासी मैगस्थनीज़के कहे अनुसार मेहनती, साहसी, अदालत में जाने से बचने वाले और शान्ति चाहने वाले थे। टाड साहब अपनी राजस्थान नामी किताब में, अबुलफ़ज़ल की तहरीर का हवाला देतेहुए लिखते हैं कि "हिन्दू बड़े धार्मिक, सभ्य, मुरव्वतदार, ख़ातिर करनेवाले, विद्या के शौक़ीन' न्यायी और होशियार अर्थात् सब अच्छे गुणोंसे भरपूर हैं। सबकामों में भरोसे के योग्य, दुःख में धीरज धरनेवाले और उनके सिपाही मैदान में मरने मारनेवाले हैं। मगर अफ़सोस अकबरके बाद मुसलमानों ने उनकी वफ़ादारी, ईमानदारी और सचाई से बुरा फ़ायदाः उठाया। भारत वासियों पर बेवफाई का कलङ्क लगाया जाताहै। लेकिन भारतवासी अपने उपकारी के सदा कृतज्ञ रहे हैं"।

न्हेबर का बयान है कि-"भारतवासियों से बढ़कर दुनिया में कोई भी ज्यादः गंभीर नहीं है। वह बहुत ही प्रसन्नचित्त, साहसी और शायद तमाम इंसानों में वही एसे हैं जो अपने पड़ोसी को भी दुःख देना नहीं चाहते"। सर मोनियर विलयम अपनी मौडर्न इण्डिया ऐण्ड इण्डियन्स में लिखते हैं कि भारतवासी कभी भी जानबूझकर किसी की हत्या नहीं करते। वह किसी अङ्गरेज़ का चित्त प्रसन्न करने के लिये भी शिकार नहीं मारते, उनका कहना है कि अपने आपभी जीवित रहो, और छोटे जीवों को भी जीता रहने दो"। दुर्भाग्य से

सर मोनियर विलियम का समय बहुत कुछ बदलगया है भारतवासी साहब बहादुरों से सम्बन्ध रखने से बहुत कुछ शिकारी होगये। मिष्टर एलफिन्सटन साहब अपनी तवारीख में लिखते हैं कि "हिन्दोस्तान के गांव वाले, दयावान्, मिलनसार, अपने कुनवे और पड़ोसियोंके लिये बड़े दयालु, ईमानदार और सच्चे होते हैं"। मिष्टर मिल अपनी हिस्ट्री आव इण्डिया में लिखते हैं कि-"मिष्टर मरसर ने सन् १८.३ ई० में पार्लिमेंट में गवाही देते हुए भारतवासियों के विषय में यह बयान किया था कि वे बड़े नर्म मिज़ाज, सुशील और अपने घरेलू मामलों में बड़े दयालु हैं। कैपटिन सैडन्हम् साहब का बयान है कि "जिन जातियोंसे मुझे वास्ता पड़ा है उन सभी में से भारतवासियों को बड़ा ही आज्ञाकारी, मिलनसार, दयालु, स्वामिभक्त, मित्र, बुद्धिमान् और निज कार्य्यों में सच्चा पाया"।

अवेडूवे का बयान है कि "भारतवासी निज कार्यों को ऐसी अच्छी तरहसे करते हैं कि उनसे बढ़कर और कोई किसी तरहसे भी नहीं कर सकता। वे इस मामले में इतने बढ़े चढ़े हैं कि यूरूपवासी भी ऐसे नहीं हैं"। सरजान मिल्कका बयान है कि "वफ़ादारी में भारतवासियों से कोई भी जाति नहीं बढ़ सकती"। सर टामस से सवाल किया कि अगर हिन्दुस्तान के साथ इङ्गलैण्ड की तिजारत का दरवाज़ा खोल दिया जावे तो क्या आपके नज़दीक हिन्दू सभ्यता की कुछ उन्नति होगी।? सारटामस ने जवाबदिया कि "मैं ठीक २ नहीं समझा कि

भारतवासियों की सभ्यता से आपका क्या मतलब है" ? भारतवासी अपने गृहस्थ सम्बन्धी कार्य्यों में तमाम यूरूपकी जातियों से अच्छे हैं और अगर हिन्दुस्तान और इङ्गलैंड के बीच तिजारत का सम्बन्ध रक्खा जावे तो मैं कहूंगा कि इङ्गलैंड हिन्दुस्तान से बहुतसी सभ्यता सीख सकताहै"। यह विचार उन अंगरेज़ों के हैं जो ईसाईमत के पक्षपात से अलग थे जो भारतवासियों को जङ्गली और लार्डकर्ज़न की तरह झूठा नहीं समझते थे।

उन्होंने अपनी राय बड़ी सोच समझकर नियतकी है। लेकिन अब मामला बदल गया है। इस समय इङ्गलैंडवासी यत्न कररहे हैं कि भारतमें विलायती सभ्यता फैलाई जावे। लेकिन अगर हम विलायती सभ्यता को ज़रा ध्यान से देखें तो सब पता लगजायेगा कि यह कैसी भयानक चीज़ है। इस बात से तो कोई भी इनकार नहीं करेगा कि जहां २ विलायती सभ्यता पहुंच रही है, वहा २ शराब, अफ़्यून और मांस का प्रचार बढ़ता जाता है। विशेष कर शराब तो विलायती सभ्यता का एक अङ्ग बन गई है। जहां पुराने समय में इनके बेचने, पीने, बनाने वालों को दण्ड मिलता था, वहाँ यह कैसी शर्म की बात है कि हालकी गवर्नमेंट रुपया वसूल करने को, शराब, अफ़्यून और भङ्ग के ठेके देरही है। और गाँव २ शहर २ शराब की दूकानें खोली जारही हैं। एक वृद्ध ने सच कहा है कि, अगर आज अंग-

रेज़ों का राज हिन्दुस्तान से उठजावे तो वे अपने पीछे अपनी सबसे बड़ी यादगारों में से एक शराब-ख़ोरीको भी छोड़ेंगे शराबनोशीने इस देश का बड़ा सत्यानाश किया। मगर कोई क्या करसकता है? जब कि खुद गवर्नमेंट ही शराब या शरारत भरे पानीको बिकवा रही है। मिष्टर फ्रेडरीक ग्रव साहब ने माडर्न रिव्यू में मदिरा पान पर एक लेख लिखा है, जिसमें गवर्नमेंट की रिपोर्ट के अनुसार दिखाया गया है कि–सन् १८०२-३ में, शराब, भङ्ग और अफ़ीम आदि की कुल दूकानें हिन्दुस्तान में ११८४७२ थीं। मगर सन् १८०३-४ में उनकी संख्या १२०८७५ होगई; अर्थात् १ हो सालमें २४०३ दूकानें अधिक होगईं। जिस देशमें इतने हज़ार दूकानें हरसाल गवर्नमेंट की तरफ़ से नई खोली जारही हों वह कबतक जीता रह सकता है। मगर गवर्नमेंट यह सब कुछ क्यों कररही है? इसलिये कि उसको रुपये की आवश्यकता है और उसको इस घिनौने पेशे से सन् १८०२-३ में ७११९५०० रुपया मिला। परन्तु यह आमदनी एकही सालमें ७९३६५००० होगई। अर्थात् एकही साल में साढ़े बयासी लाखकी रक़म ज़्यादा कमाई इससे ३० साल पहिले गवर्नमेंट को शराब से सिर्फ ढाई करोड़ के करीब आमदनी थी। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि इङ्गलैण्ड हिन्दुस्तान को कितना सभ्य बना रहा है। शायद यूरप की उन्नति का मार्ग मदिरा पान ही है। परन्तु हमारी समझ में; हिन्दुस्तान का ३० वर्ष

के अन्दर पहिले से ५ करोड़ से ज़्यादः मदिरा पान में उठजाना निहायत ही शर्म की बात है। हमारे यहाँ कलालों को अभीतक घृणा की दृष्टि से देखाजाता है। क्योंकि यह लोग कभी शराब बेचने का पेशा करते थे। मगर गवर्नमेंट ने इन सबको मात कर दिया। मिष्टर अब आगे चलकर लिखते हैं कि हिन्दुस्तान के पहिले गवर्नरजनरल वारेन् हेस्टिंग्स ने पार्लिमेंटके सामने अपने मुकद्दमे में बयान देते समय सन् १८१३ ई० में हिन्दुओं के बारे में यह राय दीथी कि वे बड़े भलेमानुष दयालु, थोड़ीसी दया पर कृतज्ञ होने वाले और अन्याय को भूल जानेवाले हैं। बिशप हेबर का बयान है कि "जो मनुष्य यह कहता हैकि, भारतवासी सभ्य लोगों से किसी बातमें भी कम हैं; उसे कभी उनके पास रहने का मौका नहीं मिला। ये स्वाभाविक दयालुचित्त, प्रसन्न, मुरव्वतदार, ज़हीन, परहेज़गार और थोड़ा ख़र्च करने वाले हैं। अपने कारोबार में मेहनती हैं। वे बहादुर और साहसी हैं। विद्याप्रिय हैं। गणित और ज्योतिष आदि विद्याओं के बड़े प्रेमी हैं। नक्काशी और पत्थरके काममें विशेष अभ्यासी हैं। अपने माता पिता के आज्ञाकारी हैं। बच्चों के साथ प्यार करते हैं"। मेक्समूलर साहब, अपनी 'इण्डिया एण्ड व्हाट केन इट टीच अस' किताब में हिन्दुओं की सहनशक्ति का वर्णन करतेहुए लिखते हैं कि-" जब मैं उन तमाम भयानक अत्याचारों और कठोरताओं को पढ़ता हूं जोकि मुसलमानों ने हिन्दुओं पर

की थीं, तौ मैं आश्चर्य में हूं कि ऐसे अन्यायी लोगों के आधीन रहकर, हिन्दू भी स्वयं शैतान क्यों नहीं बनगये, और उनमें इसक़दर सच्चाई और दियानतदारी, जोकि अबतक हम देखरहे हैं, कैसे बाक़ी रहगई? " प्रोफ़ेसर मैक्समूलर का आश्चर्य ठीक है और बिलकुल ठीक है। भारतवासियों की सभ्यता का नाश किया तो मुसल' मानों ने; भारतवासियों को अगर हिन्दू बनाया तो अधिक तर मुसलमानों ने, क्योंकि मुसलमानों के आनेके समय तक जो २ यात्री आर्य्यावर्त में आये उन की राय से विदित होता है कि आर्य्यावर्त इनसब दोषों से रहित था। यह सब दोष अधिकतः मुसलमानों के ही कारण उनमें आये। भारतवासियों ने यदि मक्कारी, झूंठ, फ़रेब, मारकाट, धोकेबाज़ी मदिरापान, माँससेवन और व्यभिचार आदि बुरी आदतें सीखीं तो वह ज़्यादःतर मुसलमानों से और किसी क़दर यूरुपवासियों से। हम इस विषय पर ऐतिहासिक चर्चा दूसरे लेख में करेंगे।

❋ दूसरा खण्ड ❋
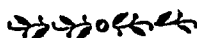
मुसलमानों के अन्याय का आरम्भ।

हम अपने पिछले लेखमें मैक्समूलर के आश्चर्य का ज़िकर करचुके हैं कि मुसलमानों के ऐसे अन्याय और कठोरता होने पर हिन्दू स्वयं भी शैतान क्यों नहीं बन गये। आज हम बड़े खेद के साथ इस विषयपर लेखनी

उठाते हैं। खेद के साथ इसलिये कि, जितने अन्याय मुसलमान-बादशाहों ने न केवल भारतवासियों पर ही किये हैं, बल्कि अपने जातिवालों पर भी किये हैं, वह ऐसे हैं जिनकी उपमा संसार में नहीं मिलसकती। इन सब दुःखपूर्ण कहानियों का वर्णन भी रंज से खाली नहीं है। विशेषकर उस समय जबकि हमको इतिहास बताता है कि मुसलमान बादशाहों ने भारतवासियों के सामने अपने चालचलन की कोई भी ऐसी अच्छी मिसाल नहीं रक्खी जिसको भारतवासी आदर्श बनाते, या जो उनके चालचलनको उभारनेवाली होती। यदि इतिहास सच्चा है तो इस बातको झूठ नहीं मान सकते कि मुसलमान बादशाहों ने भारतको नीचेही गिराया और अपनी कुचेष्टाओंसे अकथनीय निन्दितकर्म किये। इन सबकी जड़ इस्लामकी मत सम्बन्धी शिक्षा है जो कभी भी उनको कुकर्म करने से रोकना नहीं जानती। यदि हम मुसलमान बादशाहोंकी उन तमाम धोके बाज़ियों, कपटों, छलों और मारकाट के लिये, इस्लाम की मत सम्बन्धी शिक्षा कोही उत्तरदाता ठहरायें तो बेजा नहीं होगा। क्योंकि क़ुरान में ऐसी शिक्षा मिलती है, जिसके अनुसार, छल, कपट, मारकाट और झूँठी क़सम खाने में कोई दोष नहीं। बल्कि कहीं २ पहिले पैग़म्बरों का दृष्टान्त देकर इन बातों को ठीक सिद्ध क़िया गया है। मुसलमानी बादशाहों ने कामातुरतामें सबको परास्त करदियाहै। इसका कारण

भी उनका मन प्रचालक और .क़ुरान ही है। .क़ुरान जहाँ विवाहों की संख्या बनाताहै वहाँ वह "यमा मलकत ईमाए-कुम"की शिक्षा देकर इस बातकी कोई हद नहीं करता कि दासियों की संख्या कितनी हो। दासियों को दाँयें हाथ का माल कहकर, .क़ुरान ने अनाचार फैलाने में कोई क़सर बाक़ी नहीं रक्खी। .क़ुरान से ही इस बात का प्रमाण मिलता है कि उसका प्रवर्त्तक स्वयं दासियों के कारण ही बदनाम हुआ। इस बदनामी को छिपाने के लिये सूरत "तहरीम" .क़ुरान में गढ़ी गई। सूरते तह-रीम ही इस अनाचार का कारण है। जब कभी बहु-विवाह के नियम पर वा मुहम्मद साहब के बहुतसी स्त्रियें रखने पर आक्षेप किया गया है तो मुसलमान यही उत्तर देते हैं कि मुहम्मद साहब को ख़ुदा ने सौ मर्दों की शक्ति दे रक्खी थी। परन्तु जिस बातको वे अच्छी समझते थे, वह समाज को रसातल पहुँचाने वाली और सारी बुराइयों का कारण है। क्योंकि इसही से सारे पाप होरहे हैं और हुए। क्या यही बात नहीं थी जिसने इस शख्स को अपने लेपालक बेटे की स्त्री पर गिराया और ऐसा बुरा दृष्टान्त बनाया। हम चाहते हैं कि मुहम्मद को एक महान् पुरुष साबित करें। हम यह भी चाहते हैं कि उसके लिये हमारे दिल में एक सच्ची इज़्ज़त पैदा हो। लेकिन .क़ुरान हमको ऐसा करने से रोकता है। क्योंकि .क़ुरान में जो उसकी तसवीर खेंची गई है वह कुछ चित्ताकर्षक नहीं है। अगर

हम क़ुरान को भी छोड़दें तो हदीसों, या दूसरे इति-हासों को झूंठ कैसे समझें। क़ुरान और हदीस के लेखानुसार सबही, मुसलमानी मत से भिन्न ऐ हा-सिक जन कोई भी इस बात को अच्छा नहीं समझ सकता। अभी २ सन् १९०७ ई० में गवर्नमेंट आव-इण्डिया की ख़ास मंजूरी से रायल एशियाटिक सोसा इटी ने मुग़लिया बादशाहों की तवारीख़ [इतिहास] का दो बड़ी २ जिल्दों में तर्जुमा छापा है। जिस का रचयिता एक वेनिस का यात्री "मिस्टर निकोलाओहि"। जो कि शाहजहाँ के समय से औरङ्गजेब के समय तक हिन्दुस्तानमें रहाथा। इस इतिहास लिखनेवालेने शहा-जहाँके समयसे औरङ्ग़ज़ेब तकके समयके स्वयं देखेहुए वृत्तान्त लिखे हैं। यह पुस्तक इसलामी दुनिया के लिए बिलकुल नईहै। शाहजहाँ और औरङ्गजेबके राज्य समय का हाल इस पुस्तक से अधिक और कहीं नहीं मिलस-कता। शाहजहाँ के चालचलनका हाल बताते हुए, लेखक ने मुहम्मद साहब का ही चालचलन पेश किया है और इन सब बुराइयों का कारण मुहम्मद साहब को ही ठहराया है। अतः वह अपनी पुस्तक स्टोरिया डू मगोर Storia Do mogor की जिल्द पहिली में पृष्ठ १९२ पर शाहजहाँ को दोहज़ार औरतों का ज़िकर करनेके पहिले लिखता है कि 'दुनिया जानती है कि मुसलमान अपने मास्टर मुहम्मद की मिसाल को मानते हुए बड़े कामी होते हैं। यही कारण है कि उन में ऐसे आदमी पाये

आते हैं कि जिनमें से कुछ कम और कुछ अधिक, विशेषकर अमीर और बादशाह, जो कई स्त्रियों पर शान्ति न रखकर, ऐसे कारण ढूंढते रहतेहैं जिस से वे अपनी कामातुरतां को शान्त कर सकें। यह बात दावे से कही जासकती है कि शाहजहाँ इन बातों में दूसरे आदमियों से अच्छा नहीं था, क्योंकि बेगमात पर सन्तोष न करके, वह अपने दरबारियों की स्त्रियों से भी अनुचित सम्बन्ध रखता था। यही कारण था कि उसने दरबारियों और अन्य राजपुरुषों की दृष्टि में अपना सम्मान और प्रेम खोदिया और खुद भी मरमिटा "देखो स्टॉरिया डू मगोर" जिल्द पहिली पृष्ठ १६२।

शाहजहाँ का ज़िकर तो हम आगे चलकर करेंगे कि वह कैसे नष्ट हुआ, इस जगह हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि शाहजहाँ ने अधिकतर, बकौल मिस्टर निकोलाओ अपने मास्टर मुहम्मद का ही अनुकरण किया। मुसलमान बादशाहों के कर्मों का उत्तरदाता, मुसलमानी शिक्षा और अधिकतर मुहम्मद का दृष्टान्त है। भारतवासियों को गिराने के ज़िम्मेवार ज़्यादःतर यही मुसलमान बादशाह थे जैसा कि मैक्समूलर ने माना है, या हम आगे चलकर ज़िकर करेंगे। हम इतिहास को जो कि आँख से देखी हुई बातोंपर या विश्वास पर निर्भर हो, झुठला नहीं सकते, हमको यह कल्पना करलेना चाहिये कि हमारे स्कूलों में जो इतिहास पढ़ाये जाते हैं, जो कि गवर्नमेंट ने किसी द्वेष

दृष्टि से नहीं लिखे। बल्कि इसलिये लिखे हैं कि हिन्दू मुसलमानों का आपस में सम्बन्ध दृढ़ होजावे। अगर हम इस इतिहास पर ही सन्तुष्ट रहें तो भी मुसलमान बादशाहों के विरुद्ध इतना मसाला मिलता है कि जिस को पढ़कर किसी-भी ईश्वरभक्त, दयालु और सभ्य मुसलमान को अपने पुरुषाओं पर घमण्ड करना नहीं चाहिये। इस इतिहास को पढ़ कर यह फल निकालना कि मुसलमान बादशाहों ने भारतवासियों पर कैसी सुखवृष्टि की केवल भ्रम ही रहजाता है। इसके विरुद्ध एक अँग्रेज़ी लोकोक्ति है कि "जहाँ तुर्कों का क़दम जाता है वहाँ घास नहीं उगती" विशेषकर जब कि हम मुसलमानी राज के असर को मिसर, फ़ारस, स्पेन अरब, तुर्की और अफ़गानिस्तान में देखते हैं कि किस तरह वे उच्च कोटि से गिरकर अरबों के ही समान होगये तो हमें मैक्समूलर का आश्चर्य और भी सत्य मालूम होता है। आओ हम ज़रा इस इतिहास पर दृष्टि डालजायँ, जिसको हमारे बच्चे प्रतिदिन स्कूलों में पढ़ते हैं, जिससे कि हम मुसलमान बादशाहों के विषय में कोई सम्मति नियत करसकें।

सुलतान महमूद।

महमूद ग़ज़नवी से पहिले, मुसलमानों ने भारत वर्ष पर आक्रमण तो किये परन्तु बहुत थोड़े। कुछ में

उन को सफलता हुई, कुछ में नहीं हुई। मगर महमूद ने हमलों का तार बाँध दिया। मुसलमान महमूद को सच्चा मुसलमान और ग़ाज़ी समझते हैं। इसका कारण क्या है? महमूद का भारत के धन पर तो दाँत था ही, मगर साथ ही यह भी इच्छा थी कि बड़े २ बांके राजपूतों को तलवार के ज़ोर से, दीन इस्लाम में दाख़िल करे और उसका सबब ज्याद: तर यह हुआ कि ख़लीफ़ा बुग़दाद ने उसके मज़हबी जोश को देख कर एक बहुमूल्य ख़िलअत उसके लिये भेजा था। और "अमीनुल मिल्लत व यमीनुद्दौला" का ख़िताब दिया था। बस महमूद ने यह प्रण कर लिया था कि मैं दीन इस्लाम के फैलाने के लिये हर साल भारतवर्ष पर हमला करूंगा (तवारीख़ हिन्द पृष्ठ ६१) महमूद के चालचलन की यह कुञ्जी है, इस मज़हबी जोश से अन्धा होकर उसने १७ बार हिन्द पर हमले किये और लूट मार की। अगरचे तामाम मार काट का ज़िकर नहीं किया गया है, तो भी संक्षेप से यह है—छटा हमला सन् १०१४ ई० में हुआ था। उस हमले में महमूद ने थानेश्वर के प्रसिद्ध तीर्थ को, जो सरस्वती यमुना के बीच में है, लूटा और जला दिया और अनगिनत हिन्दुओं को क़ैद करके ग़ज़नी लेगया। कन्नौज से होकर महमूद मथुरा आया, जो कृष्णचन्द्र जी की जन्मभूमि होने के कारण, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। इस शहर की सुन्दरता और

मन्दिरों की विचित्रता देखकर महमूद लौट गया और उसका यह जी चाहा कि ग़ज़नी के उजाड़ पहाड़ों पर भी ऐसी इमारतें बनवाये। यहां महमूदने अपनी फ़ौज को २० दिन तक शहर लूटने की आज्ञादी इस के बाद ग़ज़नी को लौटगया। मथुरा से महमूद की फ़ौज इस क़दर हिन्दुओंको पकड़ कर लेगई कि ग़ज़नी में दो दो रुपये हिन्दू गुलाम बिका। इससे मालूम होता है कि अगरचे महमुद एक कट्टर मुसलमान था मगर वह एक लुटेरे से बढ़कर नहीं था। जहां गया उसने लूटा. स्त्री पुरुषोंको गुलाम बनाया और उनको भेड़बकरी की तरह बेचा। चूंकि लौंडी गुलाम बनाने को कुरान पुण्यसमझना है, इस लिये महमूद इन सब कर्मों को पुण्य दृष्टि से देखा करता था। बल्कि ख़लीफ़ा बग़दाद ने भी उस को इन कर्मों के लिये उकसा रक्खा था। मुसलमानों के बच्चे स्कूलों में इन घटनाओं को हिन्दुओं के बच्चों के साथ साथ पढ़ते हैं। मगर वह कौनसा सभ्य मुसलमान है जो महमूद जैसे बादशाह पर घमण्ड करे और उस के कुकर्मों को अच्छा समझे। महमूद केवल लूटना ही नहीं जानता था, बलकि वह बुतशकिन के साथ अहदशकिन (प्रतिज्ञा का तोड़ने वाला) भी था। उसने फ़िरदौसी को शाहनामा लिखने की आज्ञादी और फ़ी शेर १ अशरफ़ी देने का वायदा किया। फ़िरदौसी ने बड़ी मेहनतसे ६०००० शेर लिखे और किताब

शाहनामा ठीक करके, बादशाह के सामने पेश किया इस किताब की कविता ऐसी सुन्दर है कि जब तक फ़ारसी भाषा दुनिया में बाक़ी है उस की प्रसिद्धि कभी कम न होगी। साठ हज़ार शेर देखकर महमूद अपने वायदे से पछताया और कमीनेपन से फ़िरदौसी को साठ हज़ार रुपये अर्थात् प्रतिज्ञा किये हुए पारितोषिक का सोलहवां हिस्सा देने लगा। इस को फ़िरदौसी ने स्वीकार नहीं किया और नाराज़ होकर ग़ज़नी चला गया। सुफ़ा ६७। ६८। महमूद जैसा अन्यायी दुःख दायी आदमियों का बेचने वाला, लुटेरा और प्रतिज्ञा भङ्ग करने वाला मनुष्य किसी भी जातिके लिये सम्मान के योग्य नहीं हो सकता।

जब बादशाहको यह दशा हो तो फिर प्रजा पर उस के बुरे दृष्टान्त का असर क्योंकर नहीं पड़ेगा। महमूद का कुटुम्ब नाश होनेपर ग़ुलामोंका राज्य आरम्भ हुआ।

शमशुद्दीन अलतमश।

शमशुद्दीन अलतमश वास्तव में तो एक उच्च कुलका मनुष्य था। मगर संसार चक्र के अनुसार बचपन में एवक के हाथ ग़ुलाम होकर बिका था।

कुतबुद्दीन ने उसे बहुत लायक़ देखकर अपनी बेटी का विवाह उसके साथ कर दिया था कुतबुद्दीनके बाद शमशुद्दीन अलतमश उस के बेटे आरामशाह को गद्दी से उतार कर, आप बादशाह होगया सुफ़ा ७७॥

यह उस दीनदार मुसलमान की नमक हलाली थी। जिसने उस को उच्च पद पर पहुंचाया उस की सन्तान के साथ इस दीनदार मुसलमान ने नमक हरामी का प्रमाण दिया और अपने स्वामी के छोटे बच्चे को उस के हक़ से हटाकर, आप बादशाह बन गया। ऐसे अन्यायी बादशाहके चालचलन का प्रजापर कब अच्छा असर पड़सकता है। जिस जाति वा देश पर ऐसे २ बादशाह राज करते हों, उस का चालचलन गिरने से कब रुक सकता है। और आगे चलिये, ज़रा वरक़ों को लौटिये, इस सिलसिले के दूसरे बादशाह को देखिये।

कैक़बाद ।

सुलतान कैक़बाद का मन्त्री निज़ामुद्दीन नामी बड़ा बेवफ़ा और लोभी मनुष्य था। चूंकि कैक़बाद के बाप बुग़राख़ां ने कैक़बाद को इस खोटे मन्त्री के स्वभाव से परिचित कर दिया था और कैक़बाद को भी अयोग्य व्यवहारों से रोका था। इस लिये वह नालायक़ मन्त्री बाप और बेटों में फूट डालने में तत्पर हुआ। उस समय बुग़राख़ां बङ्गाल का सूबेदार था, उसने कैक़बाद को अपने ही पिता बुग़राख़ांसे युद्ध के लिये सेना भेजने को उकसाया। जब दोनों लश्कर सूबे बिहार में आमने

सामने आये तो दो रोज़ तक तो यूंही पड़े रहे, तीसरे दिन बुग़राख़ां ने अपने कुपूत बेटे कैक़बाद को अपने हाथ से पत्र लिख कर भेंट करने की इच्छा प्रकट की प्रथम तो वज़ीर ने यह चाहा कि भेट होने ही न पाये। अब देखा कि बादशाह मिले विना नहीं रहेगा, तो कैक़बाद को यह पट्टी पढ़ाई कि आप शहंशाह हिन्दुस्तान के आगे जिस समय सूबेदार बङ्गाल मिलने को आवे तो उस को चाहिये कि ३ बार साष्टांग प्रणाम करे। बुग़राख़ांने इस को भी मंजूर किया और भेंट का समय आया तो प्रथम कैक़बाद सभा मण्डप में बड़ी चमक दमक से आया, फिर उसका बूढ़ा बाप भी धीरे २ आया और राजगद्दीके सामने पहुंचतेही प्रथम दण्डवत् हुआ, चोबदार ने भी प्रतिज्ञानुसार आवाज़ लगाई फिर बुग़राख़ांने ज़रा आगे बढ़कर दूसरी दफ़ा प्रणाम किया। यह इन मुसलमानों की पितृभक्ति का नमूना है कि वह अपने बाप से भी पैशाचिक बर्त्ताव करने से नहीं रुके। हिन्दू भला इनके पिशाचपने से कैसे बच सकते थे। यह लोग थे जो हिन्दुस्तान में इस्लाम को डङ्का बजाने आये थे। निज़ामुद्दीन मन्त्री को तो उसके मुसलमान भाइयों ने विष देकर मारडाला। मगर कैक़बाद जैसे नालायक़, कुपूत मुसलमान को एक दूसरे दीनदार मुसलमान, मुहम्मद जलालुद्दीन खिलजीने, मारडाला। इस तरह इन गुलामों की तो सफ़ाई हुई, अब खिलजी मुसलमानों की ईमानदारी सुनिये।

जलालुद्दीन खिलजी।

जलालुद्दीन, सुलतान कैकुबाद का मन्त्री बन गया था। फिर वह बादशाह को मारकर आप गद्दी पर बैठा और ख़ानदान ख़िलजी का संस्थापक हुआ। इस कुटुम्ब का राज कुल ३० वर्ष रहा। देखो इस मुसलमान ने भी अपने स्वामी के साथ अपघात किया। जिस बादशाह ने इसको अपना मन्त्री बनाया था, उसी को इसने मारडाला।

इस मुसलमान को अपनी नमकहरामी का खूब बदला मिला इसका भतीजा अलाउद्दीन, अपने चचा को धोके से मारकर देहली के राजसिंहासन पर बैठ गया। धोका देना तो इन मुसलमानों की दृष्टि में पुण्य था। मालूम होताहै कि मुहम्मद अलाउद्दीन ख़िलजी न केवल कपटी ही था, बल्कि अपने चचा का घातक होने से फांसी दिये जाने के योग्य था। मगर चूंकि वह कट्टर मुसलमान था, इसलिये यह उसके सब कुकर्म अच्छी दृष्टि से देखे जाते थे। यह मुसलमान बड़ा कामी भी था चुनांचे बहुत से हिन्दू राजाओं और महाराजाओं के ख़ानदानों का उसने अपने पैशाचिक स्वभाव से अन्धा होकर नाश करदिया। गुजरातके राजा करन की व्याहता स्त्री कमला देवी की इज्ज़त को इसीने ख़ाक में मिलाया। चित्तौड़के विख्यातदुर्ग को

ज़ो महाराना मेवाड़की राजधानी थी, तोड़ फोड़कर लूटा। इसी पिशाच के अत्याचार के कारण महाराणी पद्मावती ने बहुत सी क्षत्राणियों सहित चितामें जल कर अपने पातिव्रत्य धर्मकी रक्षाकी और इस दुष्ट का मुख तक नहीं देखा। गुजरात के राजा करण की लड़की देवलदेवी का इस दुष्ट ने अपने बेटे खिज़रखां से विवाह कर दिया। विश्वघात इन मुसलमानों का स्वाभाविक गुण था इसलिये खिज़रखां के भाई ने अपने बड़े भाई को मारडाला और देवलदेवी से ज़बरदस्ती विवाह कर लिया। [पृष्ठ ८४॥
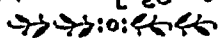
खुसरोखां।

खानदान खिलजी का अन्तिम बादशाह, खुसरोखाँ था। जो वास्तव में नीचज़ात का हिन्दू और बादशाह का गुलाम था। मगर अलाउद्दीन के बेटे कुतुबुद्दीन मुबारिक खिलजी ने इसको अपना मंत्री बनालिया था। मन्त्री बनते ही दुष्ट अपने स्वामी पर और उसके कुटुम्बके सारे हितैषियों पर हाथ साफ़ करके राजसिंहासन पर बैठ गया और देवल देवीसे निकाह कर लिया।

शिक्षा किससे ली? हिन्दुओंसे नहीं। उसके सामने मुसलमानों की मिसाल मौजूद थी। वह देखता था कि मुसलमानों में हरएक बादशाह अपने हितैषी का गला

काटता और नमकहरामी करता चला आया है इसलिये उसको भी इसी नियम पर चलना चाहिये इसलिए उसने अपने मुहम्मदी भाइयों का अनुसरण किया तो आश्चर्य की क्या बात है ? मगर इस मुसलमान को भी तो अपने किये का फल मिलना चाहिये । मार काट की रीति को जारी रखने के लिये यह जरूरी था कि खुसरोखाँ भी मार डाला जाता और हुआ भी ऐसा ही। दूसरे सालही ग़यासुद्दीन तुग़लक़ ने इस नौमुसलिम को मारडाला और इस तरह ख़िलजी वंश की समाप्ति हुई और तुग़लक़ वंश का आरम्भ हुआ ।

तुग़लक़ वंश ।

इस वंश के कुछ बादशाह बड़े मूर्ख और डरपोक थे । दूसरे बड़े २ मुसलमान सरदार और हाकिम अपने लिये बादशाह देहली से कुछ कम नहीं समझते थे, इस लिये वह बादशाह के साथ नमकहलाली और वफ़ादारी नहीं करते थे । ऊपर लिखे तमाम वृत्तान्तों को पढ़कर ज्ञात होता है कि मुसलमानों ने नमकहलाली तो सीखी ही नहीं । जिस बर्त्तन में खाना उसी बर्तन में छेद करना जिस देश में रहना उसीको हानि पहुंचाना, जिसका मन्त्री बनना उसी को मारडालना, जिसके नौकर होना उसी के विरुद्ध बग़ावत का झण्डा ऊँचा करना, जिससे मित्रता करना उसीको धोका देना । इन हालात से भले प्रकार प्रकट होरहा है कि क्या कहें कुछ समझ

में नहीं आता। मालूम नहीं कि इस्लाम में ही कोई ऐसा विष भरा है कि सांप की तरह दूध भी उसके मुँह में जाकर विष बन जाता है। खुसरोखां हिन्दू था, मगर मुसलमान बनकर वह भी हिन्दुओं के तमाम शुभाचरणों को भूल गया और बिलकुल मुसलमान ही हो गया। अपने स्वामी को मारकर स्वयं राजसिंहासन पर बैठा यह कुछ संगति का ही फल है। क्योंकि अगर ऐसा न होता तो ज़फ़रखाँ, जोकि एक ब्राह्मण का गुलाम था, और बाद में ब्राह्मणी राज्य का संस्थापक हुआ, अपने आपको पवित्र साबित नहीं करता। गङ्गो इसपर बड़ी कृपा करता था और उसने प्रथम ही कह दिया था कि तूं बड़ा भाग्यवान् होगा। जब ज़फ़रखाँ की भी वृद्धि हुई, तो अपने पुराने दयालु स्वामी की यादगार में, उसने अपना लकब सुलतान अलाउद्दीनहसन गङ्गो-ब्राह्मण रक्खा। यह ब्राह्मण की संगति ही का फल था कि जिसने ज़फ़रखाँ से असभ्य को, जिसके पुरखा-नमकहरामी और स्वामिघात करते चले आये थे, स्वामिभक्त बना दिया। खुसरोखाँ हिन्दू से मुसलमान बनकर मुसलमान का गुलाम बना तो उसकी वह दशा होगई जो ऊपर वर्णन की गई है। ज़फ़रखाँ एक ब्राह्मण का गुलाम बना तो ऐसी हालत होगई। यह संगति का ही फल है। खानदान तुग़लक के बादशाह मूर्ख और डरपोक तो थे ही, मगर उनके मददगार मुसलमान सरदार भी नमकहराम थे, जिसके हाथ जो लग गया

दबा बैठा। हाजी इलियास बङ्गाल का गवर्नर बनाकर भेजा गया। मगर वह वहाँ सरकश होकर बादशाह बनगया। जौनपुर, गुजरात, मालवा में भी मुसलमान सरदार सरकश होगये, लेकिन तैमूर ने ख़ानदान तुग़लक़ का दीपक बुझा दिया।

—+—

तीसरा खण्ड।

मुसलमानों के अन्याय का दूसरा दौर।

तैमूर।

महमूद तुग़लक़ की सेना को हराकर तैमूर दिल्ली में आया कुछ दिन तो शान्त रहा, परन्तु दिल्ली में कहीं थोड़ासा झगड़ा होगया, इस पर तैमूर ने क़त्लेआम का हुक्म देदिया। आप तो पाँच रोज़ तक आनन्द भोगता रहा उसकी सेना प्रजा को लूटती और काटती रही। जो लोग बच रहे उनमें से हज़ारों को क़ैदी बनाकर ले गई। उनमें निहायत शरीफ़ अफ़ग़ानी सभ्य और हिन्दुओं के स्त्रियां और बच्चे भी थे। इतिहास में लिखा है कि तैमूर का एक २ सिपाही भारत से डेढ़ २ सौ गुलाम लेगया था और सिपाहियों के लड़के बीस २ गुलाम अपने वास्ते अलग ले गये थे और लूट के माल का तो कुछ हिसाब ही न था। हा! जिस समय उस ऋषि सन्तान ने जिसका नैत्यिक कर्म सन्ध्या अग्नि-

होत्रादि पञ्चयज्ञ था, अत्याचारी राक्षसों के चुङ्गल में फँसकर उनके उच्छिष्ट भोजन खाने से नकार करते हुए किस प्रकार अपने रामचन्द्रादि वीरों का स्मरण करते प्राण त्यागे होंगे। उस हृदयविदारक ऋषि सन्तान की वेदना को स्मरण करके कौन ऐसा आर्य होगा जो रुधिर के आँसू न बहायेगा और वह पतिव्रता असूर्यंपश्या ऋषि अबलायें जिन्होंने पर पुरुष का मुख भी कदाचित् ही देखा होगा, म्लेच्छों के कर्कश हाथों से घसीटी जाती हुईं, अपने पैतृकस्नेह को स्मरण करती हुईं हरिणी के समान बाघ के मुख में पड़ी हुई के प्राण गँवाने के आर्त्तस्वर किस आर्य के कानों में न गूँजते होंगे।

मुहम्मदी सभ्यता के लिये इससे बढ़कर और कोई कलङ्क नहीं होसकता, कि उसने गुलामी को जायज़ रक्खा और मनुष्यों के बच्चों के साथ भेड़ बकरियों का सा बर्त्ताव किया। जिस देश पर महमूद, जलालुद्दीन, अलाउद्दीन और तैमूर जैसे अन्यायी और दुःखदायी और आदमियों को बेचने और कत्ल करने वाले महापातकी बादशाह राज्य करते रहे हों और यदि ऐसे बादशाहों के कुकर्मों ने इस मुल्क के रहने वालों के चालचलन को गिरा दिया हो और उनको उन दुर्व्यसनों का दास बना दिया हो, जो इस समय हिन्दुओं में नज़र आते हैं, तो इसमें आश्चर्य की कौनसी बात है ? प्रोफ़ेसर मैक्समूलर सच कहते हैं कि ऐसे कुकर्मी मनुष्यों के

आधीन रहकर हिन्दू स्वयं भी शैतान क्यों नहीं बन गये ?

तैमूर के चले जाने के बाद, हिन्दुस्तानमेंजो खराबी फैली वह बड़ी हानिकारक थी। परन्तु बाबर ने पानीपत के मैदान में इसका अन्त कर दिया। बाबर और उसके बेटे हुमायूँ को कुछ अधिक कालतक राज्य करने का अवसर नहीं मिला।

हाँ, अकबर के राज्यकाल ने भारतवासियों पर विशेष प्रभाव डाला अकबर दीनदार नहीं था। वह विशेषकर मुसलमान भी नहीं था। यद्यपि उसकी रगों में इसलामी ख़ून मौजूद था, तथापि उसको इस्लाम से प्रीति नहीं थी। शायद यही कारण हो कि वह दूसरे मुसलमानों की तरह अत्यन्त कट्टी छुनी, अन्यायी और घातक नहीं था। उसने जज़िया मौक़ूफ़ करदिया था जोकि मुसलमानों की ओर से काफ़िरों पर दण्ड लगाया गया था। अकबर के विरुद्ध हम अधिक नहीं कह सकते। इतना अवश्य है कि दीन इलाही का संस्थापक होने के साथ २ मीना बाज़ार का भी रचयिता था। जिस में रईस और दरबारियों की स्त्रियाँ भी सम्मिलित होती थीं। मीना बाज़ार किस प्रयोजन के लिये था, इस का ज़िकर फिर किया जावेगा।

मीनाबाज़ार अकबर के चाल चलन पर धब्बा लगाये बिना नहीं रह सकता। अकबर ने अपनी लड़की की शादी एक सूबेदार के साथ करदी थी, जो कि बग़ावत

पर कटिबद्ध होगया था । यह देखकर अकबर ने नियम बना दिया कि आगे को किसी भी शाहज़ादी की शादी न की जाये। अकबर के इस नियम पर औरङ्गजेब के समय तक अमल होता रहा। मगर इस से बड़ी२ बुराइयां पैदा हुई। अकबर यद्यपि अन्यायी नहीं था, मगर जब अन्याय करने पर आता था तो बड़ा बेढब अन्याय करता था। आगरे के समीपस्थ कुछ ज़िमीदारों ने महसूल अदा करने से इनकार किया था। अकबर ने उनको मरवाकर उनके सिरों के खम्भे चिनवा दिये और वहाँ पर अकबराबाद या मौजूदह आगरा बसाया। इन्हीं ज़िमीदारों की औलाद ने बाद में औरङ्गजेब के समय में अवसर पाकर अकबर की हड्डियों को कबर में से निकलवाकर जलादिया, और उनकी राख नदी में बहादी। अकबरने चित्तोड़ के मशहूर राजपूत जैमल की स्त्री को हासिल करने के लिये संग्राम किया। परन्तु यह लड़ाई इस को बड़ी मंहगी पड़ी। इन घोर लड़ाइयों के होने पर भी अकबर इतना बुरा नहीं था, जितने कि अन्य मुसलमान बादशाह हुवे हैं। अकबर के बाद उसका बेटा जहाँगीर गद्दीपर बैठा। जहाँगीर के विषय में यह कहना कि वह क्या था, बड़ा कठिन विषय है।

क्या जहांगीर मुसलमान था ?
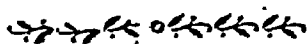
हमें कई दफ़ा लाहौर के शाहदरे जाने का इत्तफ़ाक़ हुआ। शाहदरे में जहाँगीर बादशाह का मक़बरा है। मक़बरे की इमारत किसी समय देखने योग्य थी, परन्तु अब दिन २ बिगड़ती जाती है। संगमरमर के चौके उखड़वा डालेगये और उनकी जगह साधारण ईंटें व पत्थर लगा दिये गये हैं। जहाँगीर की क़बर के ऊपर चारों तरफ़ सुन्दर अक्षरों में नाम लिखे हैं जिनको पढ़ कर यही यक़ीन होता है कि इस क़बर में कोई वीर गड़ा है। जहाँगीर की क़बर पर हरा कपड़ा, जोकि मुसलमानों में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है; पड़ा रहता है। क़बरके ऊपर फूलों का ढेर लगा रहता है। अकसर मुसलमान बड़ी श्रद्धा से क़बर को प्रणाम करने आते हैं। मुरादें माँगी जाती हैं, सर रगड़ा जाता है। ऐसा मालूम होता है गोया जहाँगीर स्वयं ख़्वाजे मुईउद्दीन चिश्ती अजमेरी के समान था। मगर नहीं; ऐसा नहीं। घटनायें कुछ औरही बताती हैं, जिनको पढ़कर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह जहाँगीर मुसलमान भी था या नहीं ? मिष्टर निकोलाओ. जिसका वर्णन हम पीछे कर आये हैं. जिसने औरङ्गज़ेब के संपूर्ण शासन काल को देखा और एक पूरा इतिहास (Storia do mogor) लिखा है। वह अपने इतिहास में, बहुतसी ऐसी घट-

ताओं का वर्णन करता है कि, जिनके बयान करने वाले जहाँगीर के समय से लेकर औरङ्गज़ेब के ज़माने तकभी ज़िन्दा थे। चुनान्चे उपरोक्त ऐतिहासिक अपने इतिहास जिल्द १ पृष्ठ १५८ में लिखता है कि एक दफ़ा जहाँगीर ने एक जेसूट पादरी को बुलाया और दूसरी बातों के अतिरिक्त जहाँगीर ने उससे पूंछा कि सूअर के माँस का स्वाद कैसा होता है? पादरी ने अपने अनुभव से उत्तर दिया कि सूअर का माँस सुस्वाद होता है। इस पर बादशाह ने पादरी को आज्ञा दी कि हमारे लिये सूअर का माँस तैयार करके लाओ। जब जहाँगीर ने वह गोश्त खाया तो उसको वह बहुत ही अच्छा लगा यहाँतक कि बाद में उसने कईबार अपने दरबारियों के सामने भी उसको खाया। चूँकि मुसलमानों में सूअर का माँस हराम समझा जाता है, इसलिये तमाम मुल्ला लोग बादशाह की इस हरकत पर नाराज़ होगये और सबने सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि आप ईश्वरीय आज्ञा को न तोड़ें। जहांगीर उस समय ख़ामोश रहा, मगर उसको बड़ाही क्रोध आया। दूसरे अवसर पर उसने तमाम मुसलमान विद्वानों को दरबार में इकट्ठा करके पूंछा कि क्या तुम किसी ऐसे मतका नाम लेसकते हो, जिसमें सूअर और शराब हलाल समझे जाते हों? विद्वानों ने उत्तर दिया कि ऐसा मज़हब तो सिवाय ईसाई मजहब के और कोई नहीं है। जहाँगीर ने आज्ञा देदी कि अच्छा तो हम कलसे ईसाईमत स्वीकार

करेंगे। उसीसमय दरज़ी को बुलाकर कहाकि हमारे लिये ईसाईयों की पोशाक तैयार करो। जहाँगीरने बड़ी गंभीरता से ईसाई मत स्वीकार करने की तैयारी करली। यह देखकर तमाम मौलवी लोग घबड़ा उठे; क्योंकि वह जानते थे कि, बादशाह के दिलमें जो कुछ आता है वह कर गुज़रता है। ईश्वर न करे यदि वह ईसाई होगया तो मुसलमानों का काम बिगड़ जावेगा। चुंनाचे उन सबने इकट्ठे होकर व्यवस्था दी कि बादशाह पर शरीयत की पैरवी ज़रूरी नहीं है,वह जो चाहे खा पी सक्ता है। इसके बाद जहाँगीर पूर्ववत् सूअर और शराब का सेवन करता रहा, और किसी ने चूं तक न की बल्कि उसने यहां तक मुसलमानों को तङ्ग किया कि ढले हुये सोने के सुअर बनवाकर अपने महल के चारों तरफ़ गढ़वा दिये। प्रातःकाल ही उठकर उन सुअरों को देखतां और कहा करता कि प्रातःकाल किसी मुसलमान का मुंह देखने के बजाय सूअर का मुंह देखना मुझे अधिक प्रिय है। यह सुअर शाहजहाँ के समय तक बराबर महल में मौजूद रहे; मगर बाद में शाहजहाँ ने उनको किले के नीचे गिरवा दिया (Storia do mogor, Vo. I. P. 158)

२-जहाँगीर मुसलमानों से घृणा करता था। शायद् राजपूतनी का बेटा होने की वजह से उसकी रगों में कुछ राजपूती खून था, या क्या ? मगर मुसलमानों को

यह पसन्द नहीं करता था। यही कारण था कि द्वेषी मुसलमान उससे भयभीत रहते थे। वह भी उनके दर्प को तोड़ने के किसी अवसर को हाथ से नहीं जाने देता था वह ऐतिहासिक फिर लिखता है कि रमज़ानशरीफ़ के दिनों में मुसलमानों का कायदा है कि वह रात के समय खूब जागते, खाते पीते और हंसते खेलते हैं, दिन के वक्त खूब सोते हैं न खाते हैं, न पीते हैं। जहाँगीर रोजा रखने के बड़ा विरुद्ध था। वह कभी रोज़ा नहीं रखता था; बल्कि मुसलमानों का रात्रिजागरण और दिन में सोना या दरबार में आकर ऊंघना, उसको बहुत ही बुरा लगता था। मुसलमानों के दर्प को तोड़ने के लिये उसने ठीक दोपहर को जबकि भूख का समय होता था, दरबार लगाना शुरू कर दिया। और उन सबके सामने खाना, पीता, बल्कि प्रायः रोज़ादार कट्टर मुसलमानों के सामने भी कोरमा पुलाओं की रकाबी रख देना कि भोग लगाइये। वह लोग इस डरके मारे कि अगर अब खाने से इनकार किया तो अभी जीतेजी शेर के सामने डलवा दिये जायँगे, रोज़ दोपहर के समय ही रोजा खोलने और पुलाओं की रकाबी को खाने के लिये विवश होते थे। इस तरह जहाँगीर ने बहुत से कट्टर मुसलमानों को समझदार बना दिया। और वह मुफ़्त की फ़ाकाकशी से बच गये।

३–जहांगीर का एक हकीम बड़ा ही पक्षपाती मुसल-मान था। बादशाह चाहता था कि इस को किसी तरह

अपने ढङ्ग पर लाये, मगर वह अपनी हट पर कायम था। एक दिन जबकि जहांगीर शराब के नशे में चूर था, उसने इस मुसलमान हकीम को बुलवा भेजा। जब वह आया तो जहांगीर ने हुक्म दिया कि हमारे पास तीर कमान लाओ ताकि इस हकीम को जिसने अपनी हिकमत के बहाने से कई आदमियों को ज़हर देकर मारडाला है, जानसे मारडालें। दरबारी लोग यह सुनकर चकित रहगये। करीब था कि जहांगीर के हाथ में तीर देदिये जाते और वह इस मुसलमान का का शिकार कर डालता, मगर नूरजहां, जोकि इस हकीम की इज्जत करती थी, इस बात को देखकर डर गई। उसने परदे के पीछे इशारा किया कि बादशाह के हाथ में बजाय असली तीरों के सरकंडे के नकली तीर देदो। इधर हकीम को समझा दिया कि सरकंडे के तीन चार तीर खाकर तुम गिरजाना, बादशाह समझ लेगा कि तुम मर गये हो। बादशाहने जो कि शराब के नशे में चूर था, इस मुसलमान के तीर मारने शुरू किये। वह कुछ देर तक तो तीर खाकर मुसकराता रहा, मगर फिर बहाना करके-अर्थात् वह बहुत ही जख्मी होगया है, एक तरफ को गिर पड़ा। यह देखकर बादशाह ने तीरों की बौछार रोकदी इस बहाने से हकीम की जान बचगई मगर वह फिर कभी बादशाह के सामने नहीं आया। बादशाह ने यह बस

कार्रवाई केवल इसलिये की थी कि वह मुसलमानों को पसन्द नहीं करता था। (पृष्ठ १३०)

४-वही ऐतिहासिक लिखता है कि-जहांगीर पादरियों के शास्त्रार्थ में बहुत मन लगाता था। वह बड़े २ पक्षपाती और विद्वान् मुसलमान मुफ़तियों और क़ाजियों को उनके सामने बुलाकर अपमानित करवाता था। चुनाचे एक पादरी जोज़फ़ को बादशाह ने भरे दरबार में क़ाज़ी आज़म के साथ बहस करने के लिये खड़ा कर दिया। क़ाज़ी की मण्डली में तमाम बड़े २ भारी विद्वान् मुसलमान सम्मिलित थे; मगर उन सब का प्रधान क़ाज़ी ही था। दूसरी ओर पादरी जोज़फ़ था बहस शुरू हुई। मुसलमानों का पल्ला भारी नज़र आया। एक समय पादरी जोज़फ़ चुप होगया। उसपर तमाम मुसलमानों ने ख़ुशी के शब्द उच्चारे, और क़ाज़ीजी ने बादशाह से कहा कि महाराज मैंने साबित करदिया है कि बाइबिल झूंठी किताब है। पादरी ख़ामोश है। यह सुनकर पादरी जोज़फ़ ने बड़े जोश से कहा कि यह बिलकुल ग़लत है, बादशाह सलामत अभी एक भट्टी में लकड़ियाँ भरकर अपने हाथ से आग लगादें, मैं बाइबिल को और क़ाज़ी साहब कुरान को, हाथ में लेकर दोनों इस आग में कूद पड़ेंगे। अगर मैं जलगया तो बाइबिल झूंठी और कुरान सच्चा, अगर क़ाज़ीजी जलगये तो बाइबिल सच्ची और कुरान झूंठा। क़ाज़ी साहब मैदान में निकलें बन्दा तैयार है। पादरी के इस

चैलेञ्ज को सुनकर काज़ी साहब के हाथ के तोते उड़गये चेहरे का रंग जाता रहा और भरे दरबार में मारे डरके क़ाज़ी जी का पाख़ाना निकल पड़ा, क्यूंकि वह जानता था कि बादशाह अभी इस को आगमें झोंक देगा । तमाम दरबार में बदबू फैलगई । बादशाह ने नाक बन्द करली । क़ाज़ी जी को धिक्कार कर बाहर निकाल दिया कि जाओ कपड़े बदलो ।

इधर पादरी जोज़फ़ को खुश होकर, पादरी आतिश का ख़िताब दिया । क्यूंकि वह आग के द्वारा बहस की समाप्ति कर देने को तैयार था । बाद में पादरी साहब बराबर आतिश के नाम से पुकारे जाते रहे । मुसलमानों को बड़ी लज्जा आई । पृष्ट १३१ । मुसलमान मदिरा पान को बुरा समझते हैं । मगर जहाँगीर बड़ा मद्यप था । नूरजहाँ ने उसकी आदत को बहुत कुछ कम कर दिया था । परन्तु नूरजहाँ को भी कभी २ बड़ा कष्ट उठाना पड़ता था । चुनांचे एक बार बादशाह ने महफ़िल सजाई । परदे से बाहर गाना बजाना हो रहा था, और बादशाह अन्दर शराब पीने में लगा था । जब वह नौ प्याले एक दम चढ़ा चुका और उसको सर पैर की सुध न रही तो नूरजहाँ को फ़िक्र हुई । बादशाह अभी और शराब माँगरहा था, मगर नूरजहाँ देनेसे इनकार करती थी । इसपर जहाँगीरने क्रोध में आकर बेगमको पकड़ लिया और दो तीन मारदीं । नूरजहाँ ने भी तुरकी बतुरकी जवाब दिया । दोनों खूब गुत्थम

गुत्था होनेलगे। यह देखकर बाजे बजाने वालों के होश उड़गये। मगर उनमें से किसी की यह जुर्रत नहीं थी कि अन्दर जाकर दोनों को अलाहदा करदे। बाजे बजाने वालोंने भी बाहर गुल मचाया और एक दूसरे को पीटना शुरू करदिया। जब बादशाहने उनका शोरो-गुल सुना तो झट परदे से बाहर आगया और पूछा कि क्या मामला है? उन्हों ने कहा कि हमने हुजूर के ध्यानको अपनी तरफ़ खेंचने के लिये यह झूंठा दंगा किया था। इसपर बादशाह बहुत हँसे।

गो नूरजहाँ के साथ उसने फिर फ़िसाद न किया मगर नूरजहाँ उस दिन से बहुत बिगड़ गई। बादशाह ने हरचन्द कोशिश की मगर वह नहीं मानी। अन्तको उसने कहा, एक शर्तपर माफ़ कर सकती हूं, कि बादशाह मेरे पाओं पर सर रखकर माफ़ी मांगे। बादशाह इस बात के लिये भी तैयार होगया।

६-बादशाह कभी २ शराब कबाब का सब सामान हाथियों पर लादकर शहर में चक्कर लगाया करता था, और खुल्लम खुल्ला शराब पीता और नाच देखा करता था। एक बार जब कि वह इसी हालत में फिर रहा था, तो रास्ते में कुछ फ़कीरों ने जो कि बेकैद कहलाते थे, बादशाह को डांटा कि तू अकेला ही मज़े उड़ाता है और हम को भूल गया? यह सुन कर बादशाह झट हाथी पर से उतर पड़ा और उसी जगह डेरा लगादिया। फकीरों के साथ खूब शराबोकबाब में शरीक हो गया।

फ़क़ीर इस बीच में नशे में बेहोश होकर, आपस में एक दूसरे के चपत लगाते और खूब दिल्लगी करते रहे। जब महफ़िल समाप्त होगई, तब बादशाह रोनेलगा कि सामाने अशरत ख़तम शुद, अर्थात् ऐश का सामान समाप्त होगया। जहांगीर बहुत जल्द रोने लगता था और ज़्यादहतर उस वक़ रोता था, जब कि उस को शराब नहीं मिलती थी। शराब के प्याले को देख कर ही वह बच्चों की तरह हंसने लगता था। बादशाह की इन कार्रवाइयों को देखकर मुसलमान बहुत ही कुढ़ा करते थे; लेकिन वे कभी भी दम नहीं मारते थे, क्योंकि उन को अपनी जान का भय रहता था।

मिष्टर निकोलाओ साहब लिखते हैं कि जहांगीर के वक़्त की आंखों देखी घटनाओं का जिकर करने वाले मेरे वक़ तक मौजूद थे, जिन्होंने उन घटनाओं का मुझ से ज़िकर किया। उन घटनाओं को देखकर कौन कह सकता है कि जहांगीर मुसलमान था। मगर वह हिन्दू भी नहीं था। अगरचे वह मुसलमानों को तंग करता था, लेकिन उसके चालचलन का हिन्दुओं पर कुछ अच्छा असर नहीं पड़ता था। ऐसे रंगीले बादशाह को देखकर अगर प्रजा भी रंगरलिया उड़ाने और शराबो-कबाब उड़ाने लगजावे तो आश्चर्य की क्या बात है? और वास्तव में ऐसा ही हुआ। क्योंकि अकबर के समय में शराब इस अधिकता से नहीं पीजाती थी, जिस कदर कि लोग जहांगीर के समय में पीने लगे थे।

जहांगीर के चालचलन का अनुकरण, शाहज़ादों और प्रजा दोनों ने किया। जहांगीर का एक पोता, शाहज़ादा खुर्रम की अनुपस्थिति में, जहांगीर की मृत्यु के बाद, शाहज़ादे बुलाकी के नाम से तख्त पर बैठा था। वह रात दिन शराबोकबाब और नाचोरंग में मशगूल रहता था। कुछ महीनों के बाद शाहज़ादे खुर्रम ने उस को हराकर भगा दिया और उस के लड़कों को जिन्दा दीवार में चुनवादिया और खुद शाहजहां के नाम से गद्दी पर बैठा।

शाहजहां।

शाहजहाँ मुग़लिया बादशाहों में अपनी क़िस्म का निराला बादशाह था, मगर बेरहमी और ज़ुल्म में किसी मुसलमान बादशाह से कम नहीं था। चुनान्चे उसने गद्दी पर बैठतेही, बाबर की औलाद में जिसक़दर मरद थे उन सबको मरवाडाला। मगर शाहजहाँ का अपना परिणाम भीठीक नहीं हुआ। इसका कारण इसकी बदचलनी बयान कीजाती है। मिष्टर निकोलाओने जो शाहजहाँ के जीवनकाल में ही हिन्दुस्तानमें मौजूद थे, अपने इतिहास में इस बादशाह के चालचलन का निहायतही ख़राब तौर पर वर्णन किया है। हालात ऐसे गन्दे हैं कि हम उनको अपने शब्दों में यहाँ दर्ज करनाभी मुनासिब नहीं समझते। हम इस विषय को दर्शाने के लिये मिष्टर निकोलाओ की

तवारीख़ की पहिली जिल्द की सिर्फ थोड़ी सी घटनायें वर्णन करते हैं, जिस से मालूम होजायगा कि शाहजहां क्यों तबाह होगया ? शाहजहां ने महल की बेगमात पर सन्तोष न करके, अपने अमीरों वजीरों और दरबारियों की औरतों पर भी हाथ साफ करना आरम्भ करदिया। चुनान्चे जफरखां की स्त्री से, जो कि एक उच्च पदाधिकारी था, शाहजहां ने अपनी पापेच्छा पूरी की। इसी तरह एक दूसरे सरदार खलीलुल्लाखां की स्त्री को भी उस ने भ्रष्ट किया। मगर सब से बढ़कर शर्मनाक वर्त्ताव उसने शाइस्ताख़ाँ की औरत से किया। शाइस्ताखाँ की स्त्री सुन्दर होनेके अतिरिक्त; बड़ी पतिव्रता भी थी। जब शाहजहाँ ने अपनी कुटनियों के द्वारा उसके पास सन्देसा भेजा, तो उसने इनकार करदिया और किसीतरह भी अपनी इज्ज़त को ख़राब करवाने को तैयार नहीं हुई। अन्तको शाहजहाँने धोके से उसे ख़राब किया और वह इस तरह कि उसने यह काम अपनी बड़ी लड़की के सुपुर्द किया। जिसको कि बेगमसाहिबा कहाजाता था। बेगम ने शाइस्ताखाँ की औरत को दावतदी, और इस बहाने से उसको महिल में बुलाकर, शाहजहाँ के सुपुर्द कर दिया। शाहजहाँने ज़बरदस्ती इस निरपराधिनी की इज्ज़त को बिगाड़ा। वह निहायतही दुःखिता होकर घर लौटी। खाना पीना छोड़ दिया और इसी दुःख में कुछ दिनों के बाद मरगई शाइस्ताखाँ ने जोकि औरङ्ग़ज़ेब के समय में ढाके का

नवाब मुक़र्रिर हुआ, मौक़ा पाकर शाहजहाँ की इस वेशरमी का बदला लिया। अकबर ने जिस मीनाबाजार की बुनियाद डाली थी वहभी केवल इसलिये थी कि अमीरों और वज़ीरों की स्त्रियों को भ्रष्ट करें। इसलिये हयादार सभ्यगण कभी अपनी स्त्रियों को मीनाबाज़ार में जाने की आज्ञा नहीं देते थे। शाहजहाँ ने इस रीति से जो २ अनाचार किये वह बयान से बाहर हैं। मीना बाज़ार में केवल स्त्रियों को ही जाने की आज्ञा थी। शाहजहाँ एक सुनहरी तख़्तपर, जिसको औरतें उठाये होती थीं, बाज़ार में से गुज़रता था। जिस किसी स्त्री को भ्रष्ट करना होताथा वह उसकी दुकान पर सौदा ख़रीदने चलाजाता। मगर उसका सौदा दरअसिल दूसरी किस्म का होना था। जब वह अपनी ख़वासों के द्वारा तमाम नियम तै करलेता था, तो वह इस लेडीको नियत स्थान पर लेजाती थीं, जहाँ बादशाह पहिलेसेही पहुँचा हुआ होता था। इसतरह वह बारंबार से इन औरतों को नष्ट भ्रष्ट करता था। मगर अमीरों वज़ीरों की स्त्रियें भी कुछ ऐसी वेहया और निर्लज्जा होती थीं कि वे केवल इसी कारण बनठन कर मीना बाज़ार में आतीथीं कि किसीतरह बादशाह उनको पसन्द करले। क्योंकि पसन्द की हुई को मालामाल होनेकी आशा होती थी। मीनाबाज़ार में इतनी स्त्रियें इकट्ठा होती थीं कि एक दफ़ा जब बाज़ार समाप्त हुआ और उनको दरवाज़े से बाहर निकलते हुए गिनागया तो उनकी गिनती

३०००० तीस हज़ार से ज्यादह निकली। शाहजहाँ इस क़द्र कामी था कि उसकी पापेच्छाका बयान करना कठिन है। इन सब बातों पर भी सब्र न रखता हुआ, वह अक्सर बाजारी औरतों को महल में बुलाया करता था, और उनका नाच रंग कराने के अतिरिक्त, उनके साथ बदचलनी भी करता। शाहजहाँ के महल में बेगमात के अतिरिक्त, इस प्रकार की औरतों की संख्या दोहज़ार थी और उनकी प्रत्येक दिन वृद्धि ही होती जाती थी। चूंकि शाहजहाँ को दूसरे भलेमानुषों की स्त्रियों को भ्रष्ट करते कुछ भी लज्जा नहीं थी, इसलिये तमाम प्रतिष्ठित समुदाय उससे तङ्ग आगया था। यही कारण था कि जब औरङ्गज़ेब ने बग़ावत का झंडा बुलन्द किया तो एकभी सरदार, उसकी या उसके प्यारे बेटे दाराकी हिमायत के लिये आगे न बढा बल्कि सबके सब उसको छोड़कर औरङ्गज़ेब से जामिले। औरङ्गज़ेव ने अपने भाइयों को कतल कर डाला और बापको कैद करलिया। मगर बूढ़ा बाप सफ़ेद डाढ़ी रखकर भी अपनी बदचलनी से नहीं हटा। बल्कि इसही के कारण वह मरा भी। वह इसप्रकार हुआ कि जब बुढ़ापे में उसकी ताकत कम होगई तो उसने तरह२के कुश्ते खाने शुरूकिये। एक दिन जबकि वह शीशेके सामने खड़ा हुआ अपनी डाढ़ी मूंछ को देखरहा था, तो पीछे कई एक बांदियों ने हँसी की। देखो—यह बूढ़ा अभीतक अपनी करतूतों से नहीं हटा और समझता है कि वह

अभी तक कलका बच्चा है। शाहजहां ने इस हरकत को देखा और उनको अपनी जवानी का जोश दिखलाने के लिये बड़े तीव्र कुश्ते खाने शुरू किये। इन कुकर्मों से उसका मसाना फट गया और वह शीघ्र ही मरगया शाहजहां का चालचलन इसी विषय में गिरा नहीं था, बल्कि यह देखकर कि विवहीता स्त्रियों से ज्यादह सन्तान पैदा करने से राज्य के आने वाले वारिसों में झगड़ा होगा, उसने केवल दो बेटियों और चार बेटों को ज़िन्दा रक्खा। उसके बाद जिस किसी बेगम को गर्भ रहता, तो तत्काल ही गिरवा देता। दौर्भाग्य से यह शाहजहां की जारी की हुई रस्म मुग़लिया बादशाहों में मुद्दत तक रही और औरङ्गज़ेब जैसे मुसलमानने भी इसको पसन्द किया। चूंकि अकबर के समय में अकबर के दामाद ने बादशाह के विरुद्ध बग़ावत की थी और तख्तपर अधिकार करना चाहा था, इसलिये अकबर ने यह नियम बनाया कि आगेको किसी भी, मुग़लिया वंशकी शाहज़ादी का विवाह न किया जावे। औरङ्गज़ेब के समय तक यह रस्म जारी रही। शाहजहां इतना व्यभिचारी था परन्तु उसने भी अपनी लड़कियों का विवाह नहीं किया, जिसका फल यह हुआ कि, उन्होंने अनुचित रीतियों से अपनी कामाग्नि बुझाई। शाहजहां की बड़ी लड़की की यह अवस्था थी कि उसने क़िले के बाहर महल बनवा लिया था। चूंकि बादशाह को इसकी ख़ातिर मंजूर थी, इस-

लिये वह उसकी किसी भी इच्छा की पूर्त्ति में बाधक नहीं होता था। उन शाहज़ादियों के अपने आदमी थे, जोकि ख़्वाजा सराओं की मारफ़त महल में ले जाये जाते थे, और वह अकसर औरतों के भेष में जाते थे। कई दफ़ा वे पकड़े गये और मार डाले गये। शाहजहाँ की छोटी लड़की, रोशनआरा बेगम, जो कि औरङ्गज़ेब की तरफ़दार थी और जिसने औरङ्गज़ेब को तख़्त हासिल करने में बड़ी मदद दी थी, सफ़र में किसी लौंडीको अपने हौदेमें साथ नहीं रखती थी, बल्कि लौंडी के बजाय एक नवयुवक को ज़नानी पोशाक में साथ रखती थी। औरङ्गज़ेब चूंकि मुसलमान था, वह चाहता था कि अकबर की जारी की हुई कुप्रथा को तोड़ दे और अपनी लड़कियों की शादी करदे, लेकिन उसको ऐसा करने के लिए कोई मौक़ा नहीं मिलता था, मगर वह मौक़ा जल्दी ही उसके हाथ आगया। औरङ्गज़ेब की बड़ी लड़की, जोकि बहुत उम्र की होचुकी थी; रोशनआरा के हालात से वाक़िफ़ थी। इसको पता लगा कि रोशनआराने महल में नौ नौजवान, औरतों के लिबास में रख छोड़े हैं। उसने अपनी मौसी से दरख़्वास्त की कि बराय ख़ुदा इनमेंसे एक नौजवान मुझे देदे। मगर रोशनआराने जवाब दिया मैं नहीं दूंगी, अगर तुझे जरूरत है तो और मँगवाले। दोनों में झगड़ा होगया। लड़की ने मतलब पूरा होते न देखकर भांडा औरङ्गज़ेब के सामने फोड़ डाला। रोशनआरा के महल

की तलाशी हुई, और उन नौ आदमीयों को गिरफ़्तार करके मरवा डाला गया। मगर साथ ही रौशनआरा काभी अन्त कर दिया गया। इस घटना के बाद औरङ्ग-ज़ेब ने फ़ौरन् अपनी लड़कियों की शादी करदी और शाही नियमको कुछभी परवाह नहींको विशेषतया देखो Storia do mogor. Vo I. P. 192-200 and 2nd volumme.

अपनी प्रिय बेगम ताजमहल की मृत्यु के बाद शाह-जहां ने (आगरे की बजाय देहली में रहना शुरू कर दिया) और तुग़लक़ाबाद के पुराने खंडरात पर मौजूदा देहली की नीव डाली, और उसका नाम शाहजहा-नाबाद रखा। जब शहरकी नीव रक्खी जानेवाली थी तो उसने हुक्म दिया कि बहुत से क़ैदियों के सिर काटकर बुनियाद में रखदिये जावें चुनांचे ऐसा ही किया गया। Storia ao Mogor. B. J. P. 183 निदान इस प्रकारकी बहुतसी घटनायें बतायी जासकती हैं, जिनसे पता लग सकता है कि शाहजहां किस प्रकार का बादशाह था, हम इन बातों को केवल इस-लिये बयान कर रहे हैं कि जब बादशाहों के चालच-लन ऐसे गिरे हुए थे कि वह धोका, फरेब, मक्कारी और मार काट आदि और शराबोकबाब, बदमाशी व्यभिचार से ज़रा भी न डरते हो तो प्रजा का चाल-चलन क्योंकर अच्छा रह सकता है। अगर ऐसे बाद-शाहों के आचरणों को देखकर भारतवासी आर्यत्व से

गिरगये हों तो मेक्समूलर के आश्चर्य के लिये काफी वजह समझी जासकती है। विशेषकर औरङ्गज़ेब जो कि मुसलमानों के नज़दीक बड़ा ईश्वर भक्त समझाजाता है, एक ऐसा पुरुष था जो इन बातों में गत पापियों से बढ़गया। हम इस मज़मून को अगले खण्ड के लिये छोड़ते हैं।

—:○:○:—

❀ चौथा खण्ड ❀

अन्याय की मूर्त्ति औरङ्गज़ेब

औरङ्ग.जेब और उसके जानशीन।

हम मैक्समूलर की हैरानी को सिद्ध करके के लिये शाहान इस्लाम के रहन सहन और उनके चालचलन के विषय में अपने पिछले मज़मून में किसी क़दर संक्षेप से काम ले चुके हैं, जिससे मालूम होसकना है कि उक्त प्रोफ़ेसर की हैरानी कितनी उचित है और कि शाहाने इस्लाम का चालचलन कैसा लज्जास्पद (शर्मनाक) था और उसने भारतवासियोंपर कैसा ज़हरीला असरकिया मगर मिष्टर निकोलाओ के कथनानुसार, इसप्रकार की तमाम कार्रवाइयों के लिये, उनके सामने उनके मास्टर

मुहम्मद की मिसाल मौजूद थी, मुसलमानों की दृष्टि में औरङ्गज़ेब एक पक्का दीनदार समझा जाताहै। चुनांचे ज़्यादा अरसा नहीं हुआ कि एक कट्टर मुसलमान अख़बार ने कई मज़मून औरङ्गज़ेब को धर्मात्मा ज़ाहिर करने के लिये लिखे थे। अगर दीनदारी इसीबात का नाम है कि क़ुरान की क़समें खाई जावें और उन को बार २ तोड़ा जावे और लोगों को क़ुरान की क़समें खाकर धोखा दिया जावे, मक्कारी फ़रेबसे काम लिया जावे, भाई बन्धुओं को चुन २ कर क्रूरता से मारडाला जावे; बापको क़ैदख़ानेमें भी तरह२ की तकलीफ़ें दीजावें और जा लोग उसके साथ भलाई करें उनको एक २ करके ज़हर देकर मारडाला जावे, प्रजाको बिना अपराध कष्ट दियाजावे, अगर दीनदारी के लिये यही गुण चाहियें तो हमभी मुसलमानों के साथ सहमत होते हैं। लेकिन अगर दीनदारी किसी और चीज़ का नाम है तो औरङ्गज़ेब को भेड़िया कहना बेजा नहीं होगा। जैसा कि हम साबित करेंगे। मगर चूंकि क़ुरान में इस प्रकार की तमाम घृणित कार्रवाइयों को उचित समझा गया है। बल्कि ख़ुद अल्लामियां ने, जो कि क़ुरान का कर्त्ता है, जगह २ स्वयं इसप्रकार की अमली काररवाई करके दिखलाई हैं, जो कि मनुष्यता के बाहर हैं, इस लिए औरङ्गज़ेब ने, अपने पीर मुरशद का अनुसरण किया तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इन मज़मूनों के के लिखने से हमारा यह मतलब नहीं है कि हम मुसल-

मानों के ज़माने को स्याह साबित करें। पिछले खण्ड में हम यह दिखा चुके हैं कि मुसलमान बादशाहों ने किस प्रकार अपने बान्धवों को धोके से मारा और अपनी बहुत सी स्त्रियें तथा बांदी और वेश्या आदि रखते हुए भी उन्होंने किस प्रकार अन्य पतिव्रता स्त्रियों का धर्म नष्ट किया। औरङ्गज़ेब यद्यपि ऐसा कामी नहीं था। परन्तु फिर भी उसने अपने भाइयों को मारने, पिता को कैद करने, अपने साथ उपकार करने वालों को धोका देने आदि पापकर्मों से इन सबकी कसर पूरी करदी। किन्तु हम प्राचीन आर्यों की आत्मिक अवनति का ज़िक्र कर रहे हैं और इस अवनति के कारणोंमेंसे एक कारण आर्यावर्त्त में मुसलमानों की बादशाहत भी है। इसलिए हम इस अप्रिय अप्रासङ्गिक विषय को बीच में लाने के लिये मजबूर हुए हैं। इस विषय का एक भाग हम वर्णन कर चुके हैं परन्तु दूसरा भाग औरङ्गज़ेब और उसके स्थानापन्नों के लिए नियत है। आओ ज़रा हम औरङ्गज़ेब की ज़िन्दगी और उसके चरित्रों को पढ़कर किसी विशेष परिणाम पर पहुँचने का यत्न करें। इस विषय में हमारा पथ प्रदर्शक वही मिष्टर निकोलाओ होगा, जिसने औरङ्गज़ेब के समय की स्वयं देखी हुई घटनायें लिखी हैं।

औरङ्ग़ज़ेब या सफ़ेद सांप की पैदायश।

औरङ्गज़ेब की पैदायश के सम्बन्ध में एक विचित्र कहानी विख्यात है। जहांगीर अभी ज़िन्दा ही था कि शाहज़ादे खुर्रम के यहां जो बाद में शाहजहां के नाम से मशहूर हुआ, दारा और शाहशुजा पैदा हुए। औरङ्गज़ेब इन दोनों से छोटा था। जब इसके पैदा होने का समय नज़दीक आया, तो इसकी मां के एक विचित्र दर्द आरम्भ हुआ, जो पहिले कभी नहीं हुआ था। जहांगीर ने हुक्म दिया कि जब बच्चा पैदा हो, उसकी तत्काल ही ख़बर दी जावे। जब वह पैदा हुआ तो ख्वाजःसरा ने औरङ्गज़ेब के पैदा होने का समाचार सुनाया। वह भागा आया और बच्चे को देखकर बोला अगर यह जिन्दा रहा तो बड़ा ही बलवान् बादशाह होगा। जो कि तमाम हिन्दुस्तान को विजय करेगा, जहांगीर की यह भविष्यवाणी बहुत कुछ पूर्ण हुई। परन्तु शाहजहां औरङ्गज़ेब से बड़ी घृणा करता था। चूंकि औरङ्गज़ेब दूसरे भाइयों से कुछ अधिक सुन्दर और गोरा था। इसलिए वह उसको घृणा के कारण मार सफेद अर्थात् 'श्वेत सर्प' कहा करता था कईबार शाहजहां ने विचार किया कि इस दुष्ट सर्प को मार डालें, मगर उसकी बहिन के कहने से रुका रहता था। शाहजहां की घृणा का कारण अधिकतर यह था कि, जब वह जहांगीर से बाग़ी होकर दक्षिण में फिसाद फैला

रहाथा उस समय औरङ्गज़ेब शाह बीजापुरसे मिलगया इधर जहाँगीर मरगया और उस की जगह खुसरो-परवेज़ का लड़का या जहाँगीर का पोता सुलतान दावरबख़्श सुलतान बुलाकी के नाम से तख़्त पर बैठ गया। सुलतान दावरबख़्सने तख़्त पर बैठतेही शाह बीजापुर के नाम हुक्म भेजा कि ख़ुर्रम को क़ैद करलो। शाह बीजापुर ने ख़ुर्रम को मय स्त्री बच्चों के क़ैद करलिया। ऐसी बुरी दशा में जब कि उसका कोई मित्र व साथी नहीं था, उसकी एक बेगम गर्भिणी थी। बेगम ने ख़ुर्रम से प्रार्थना की कि मेरा जी सेवखाने को करता है। ख़ुर्रम हैरान था कि सेव कहाँ से लाकर दे। दैवयोग से फ़क़ीर वहाँ आनिकला। उसने ख़ुर्रम को दो सेव दिये। ख़ुर्रम ने उसको ईश्वर का भक्त समझ कर पूँछा कि मेरी औलाद में से कौनसा बेटा है जो मेरे वंश का उच्छेद करेगा। फ़क़ीर ने औरङ्गज़ेब की ओर संकेत करके कहा कि, यह लड़का तेरे वंशका समूल नाश करेगा। औरङ्गज़ेब की आयु उस समय ९ वर्ष की थी। शाहजहाँने चाहा कि औरङ्गज़ेब को मारडाले परन्तु उस की बहनने ऐसा करने से रोकदिया। जब एक अद्भुत प्रकार से शाहजहाँ ने, शाह बीजापुर की क़ैद से छुटकारा पाया, और देहली के तख़्त पर अधिकार करके तमाम दावेदारों को मारडाला फिर उसने कन्धार को विजय करने का विचार किया। रास्ते में एक फ़क़ीर ने शाहजहाँ से कुछ माँगा और कहा मैं भूखाहूँ। शाहजहां

उसको रुपया देने लगा। इसपर औरङ्गज़ेब ने मना कर दिया कि फ़कीर झूँठ बोलता है, इस के पास चालीस रुपये मौजूद हैं। शाहजहाँ ने उसी समय फ़कीर की तलाशी ली तो ४०) बरामद हुए सब लोग हैरान थे कि औरङ्गज़ेब ने यह बात कैसे जानली। सबने इसको वली कहना शुरू किया। शाहजहाँ ने भी कहा कि अगर तुम इस फ़कीर से मिल नहीं गये हो तो निश्चय तुम वली हो, मगर बाद को मालूम हुआ कि औरङ्गज़ेब ने इस फ़कीर को पहिले ही से सब पट्टी पढ़ा छोड़ी थी। शाहजहाँ औरङ्गज़ेब से औरभी नफ़रत करने लगगया, और इसको धोकेबाज़ समझकर उसको सबसे छोटा पद दिया। औरङ्गज़ेब इस बात को देखकर जलगया। उसने दाराको, जाकि शाहजहाँ का बड़ा लड़का था और जिसे शाहजहाँ बहुत प्यार करता था, मारडालने की ठानली। एक दिन वह भाला और तलवार लगाकर, महलके दरवाज़े पर दाराके निकलने की बाट देखने लगा। दारा बाहर आया तो उस की पालकी के पीछे घोड़े को दौड़ाया; दारा गिर पड़ा, मगर बचगया। उसने बादशाह से इस बर्ताव का ज़िकर किया। बादशाह ने बेटों में नाचाकी देखकर सबको अलग २ कर देना चाहा। चुनांचे शाहशुजा को बङ्गाले का गवर्नर नियत करके रवाना करदिया। मुराद को गुजरात का सूबेदार मुक़र्रर कर दिया। दाराको अपने पास रक्खा मगर औरङ्गज़ेब को मुलतान जैसे गर्म ज़िलों में फेंका

जहाँ वह कोई शरारत न करसके। औरङ्गज़ेब ने मुलतान पहुँचकर अपने बड़े भाई दाराके नाम प्रेमपत्र लिखने आरम्भ किये। अपने कुकर्मों की क्षमा माँगी और प्रार्थना की कि अगर प्रिय भ्राता बादशाह से कह कर मुझे दक्षिण में भिजवादें तो मैं जीवन भर आपका कृतज्ञ रहूंगा। दारा बहुत ही नेकदिल, ईश्वरभक्त और उदार चित्तथा, इसने बापके पास औरङ्गज़ेब की सिफ़ारिश की, मगर शाहजहाँ ने जवाब दिया कि तुम मूर्ख हो, तुम इस ज़हरीले सांप को दूध पिलाना चाहते हो, जो तुम्हारे डंक मारने से नहीं रुकेगा मगर दाराने कहा कि मैं अपने प्रिय भ्राताको विपत्ति में नहीं देख सकता।

अन्तको शाहजहां ने औरङ्गज़ेब को दाराके कहने से दक्षिण में बदल दिया जहां उसने खूब दिलखोल कर बग़ावत के सामान इकट्ठे किये। लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये वह कपट मुनि बन गया लम्बी २ नमाज़ें पढ़ा करता। जमीनपर सोता, फ़क़ीराना वेष रखता, कुरान पढ़नेमें लगा रहता, और सबसे यही कहता कि मुझे राज्य की इच्छा नहीं। मैं जल्दी ही मक्के के हज को जाने वाला हूं। मगर शाहजहां को इसकी इन बातों पर कभी यक़ीन नहीं आता था और वह उसको बड़ा फ़रेबी और मक्कार समझता था। साथ ही दारा के दिल में भी इस फ़क़ीर का बड़ा डर रहता था। दक्षिण

में पहुंच कर उसने बुरहानपुर में रहना आरम्भ किया और रात दिन नई फ़ौज भरती करतारहा। उसका गुरु शेख़मीर उसका सलाह देनेवाला था। इधर उसको बहन रौशन आरा बेगम उसकी तरफ़ से जासूसी का काम करती थी और दरबार की तमाम बातों से उस को विदित करती रहती थी। कुछसमय,तक औरङ्गज़ेब अपनी बनावटी भक्ति के होनेपर भी खूब शरावोकबाव में लगारहा। वह एक नाचने वाली लड़की पर आसक्त होगया। इश्क में तमाम नमाज़ रोज़ा भूलगया! रात दिन शराब पीता, नाच देखता और ऐसेही कुकर्म करता रहा, यहाँतक कि वह लड़की मरगई। औरङ्गज़ेब फिर बगला भक्त बनबैठा। S. D. M. V JP, 200-230

शाहजहां की बीमारी और उस के बेटों का पैतृकस्नेह।

शाहजहाँ, जैसा कि हम पहिले लेख में लिखचुके हैं, बड़ा कामी था। चूंकि इस के अंग शिथिल होचुकेथे, इसलिये बुढ़ापे में भी युवापनका आनन्द भोगने के लिये; इसने औषध और कुश्तों के द्वारा, कामाग्निको प्रचण्ड रक्खा। एकदफ़ा सीमा से उल्लंघन करने के कारण, उसका पेशाब बन्द होगया और तीन दिन तक बन्दरहा। हालत बड़ी नाज़ुक होगई, बचने की आशा नहीं रही। शाहजहाँ ने दरबार आना बिलकुल बन्द करदिया। क़िले के तमाम दरवाज़े बन्द करदिये गये,

और हुकुम देदिया गया कि सिवाय दारा के और कोई अन्दर न आनेपाये, और वह भी सिर्फ दिनके वक्त, रातके वक्त सिर्फ़ शाहजहाँ की बड़ी लड़की उसके पास रहती और दारा तकको अन्दर सोने की आज्ञा नहीं थी। शायद राज्य की कामना से वह उसको जल्दीही मारडाले। शहर में यह चर्चा उड़गई कि शाहजहाँ मरगया और दारा ने किसी कारण उसकी मौतको छिपारक्खाहै। यह ख़बर शाहजहाँके बेटों तकभी जापहुंची। हरएकने तख्तपर अधिकार करनेको हाथपांव मारने आरम्भ किये। शाहशुजा सूबेदार बंगाल ने जोकि दारा का छोटा भाई था, फौरन चालीस हज़ार फौज के साथ दिल्ली की ओर कूंच करदिया और मशहूर कर दिया कि चूंके दाराने राज्य की इच्छा से मेरे बापको मार डाला है, इसलिये अपने बाप के ख़ूनका बदला लेने को मैं उसपर चढ़ाई कररहा हूं। इस बीच में शाहजहाँ की तबीयत अच्छी होगई। जब उसने शाहशुजा की बग़ावत का हालसुना तो उसको बहुतही अफ़सोस हुआ। उसने अपने हाथ से अपने बाग़ी बेटे को ख़त लिखा कि मैं बिलकुल चंगाहूं कुछ कमज़ोरी है तुम कुछ फिक्र न करो। अपने इलाक़े बंगाल को लौटजाओ।

शुजाने इस ख़त को जाली समझा, और बराबर आगे ही बढ़ा चलाआया। जब शाहजहाँ ने देखा कि यह भूत सरसे नहीं टलता तोउसने दारा के बड़े लड़के सुलेमानशिकोह को मय राजा जयसिंह के शुजा के

दण्ड देने को रवाना किया। राजा जयसिंह बड़ा बढ़िया सेनापति और नीतिज्ञ था। उसका नाम हिन्दुस्तान में सम्मान से लिया जाता था, बादशाहने जयसिंह को समझाया कि हीले बहाने से शुजा को पीछे लौटादेना और लड़ाई तक नौबत न पहुंचने देना। मगर शुजा बातों से कब टलने वाला था, आख़िर लड़ाई हुई जिस में शुजा को नीखा देखना पड़ा और वह भाग निकला। सुलेमान शिकोहने उसका पीछा किया। उधर गुजरात में सुलतान मुराद ने बग़ावत का झंडा बुलन्द किया और आगरे की ओर चलपड़ा। मगर मुराद अपने बाप की तरह ज़्यादा औरतों में समय व्यतीत करने वाला था। वह कुछ अधिक अनुभवी नहीं था औरंगज़ेब ने उसको अपने जाल में फंसाना चाहा।

औरङ्गज़ेब की चालाकी और मक्कारी।

औरङ्गज़ेब की तमाम साज़िश बहुत ही छुपी और सोचविचार कर होतीथी। जब वह दक्षिण का सूबेदार होकर बुरहानपुर पहुंचा तो उसने उसी समय से राज्य के लिये जोड़ तोड़ लगाने आरम्भ करदिये, गोल-कुण्डा की रियासत अभी स्वतन्त्र थी। शाह गोल-कुण्डा ने मीर जुमला को अपनी फौज़ का सेनापति नियत करदिया। मीरजुमला ने बादशाह के लिये बहुतसा नया इलाका फ़तेह करदिया। परन्तु दूसरे अमीरों को मीर जुमला की बढ़ीहुई ताकत पर जलन करने का

मौक़ा मिलगया। उन्होंने चाहा कि किसी तरह मीर ज़ुमलाको बादशाह की नज़रसे गिरादिया जावे। चुनाचे इसपर कलङ्क लगादिया कि वह बादशाह की बेगम से बुरा सम्बन्ध रखता है। शाह गोलकुण्डा ने बिला किसी प्रकार के अनुसन्धान किये मीर ज़ुमला की गिर-फ्तारी का हुक्म देदिया। मीर ज़ुमला को पहिले ही से पता लगगया कि बादशाह मुझसे शत्रुता रखता है। वह अपनी फ़ौज को लेकर भाग निकला, और झट औरङ्गज़ेब से जामिला। औरङ्गज़ेब ने मीर ज़ुमला के कहने से गोलकुण्डा पर चढ़ाई करदी और शहर को घेरलिया। उधर शाहजहाँ को जब इस बातका पता लगा तो उसने यह ख्याल करके शायद गोलकुण्डे को फतह करके औरङ्गज़ेब स्वयं बादशाह होने का विचार न करने लगे फौरन उसको लिख भेजा कि गोलकुण्डे को छोड़दो और शाह से सुलह करलो, सुलह होगई, लेकिन मीर ज़ुमला औरङ्गज़ेब के हाथ आगया। औरङ्ग-ज़ेब ने मीर ज़ुमला को बादशाह के पास देहली भेज दिया बादशाहने उसको वज़ीर (प्रधान) कर दिया और मुअज़्ज़मख़ाँ का ख़िताब देकर फिर से गोलकुण्डा बीजापुर और लङ्का के फ़तह करने के लिये बड़ी फौज का सेनापति नियत करके दक्षिण को भेजदिया और उनके साथ महाबतख़ाँ, सलाबतख़ाँ आदिको भी भेज दिया। अब औरङ्गज़ेब के हाथ में राज्य की प्रायः

सारी सेना आगई मीर जुमला उसका अपना आदमी था, सलाबतखाँ आदि को उसने जोड़ तोड़ करके अपनी ओर करलिया।

इधर शिवाजीको औरङ्गज़ेबने सन्धि द्वारा गाँठलिया कि अगर तुम इसअवसरपर चुपरहो तो मैं तुमको अपनी ओर से विशेष जागीर दूंगा। चूंकि सुलतान मुराद गुजरात में अलहदा फौज़ के साथ देहली की ओर कूंच कर रहा था। औरङ्गज़ेब ने मुरादकी मूर्खता का फ़ायदा उठाना चाहा, और नीचे लिखा हुआ ख़त मुराद के नाम रवानाकिया।

अज़ीज़ुल क़द्र शाहज़ादे मुराद बख़्श! आपको मालूम होगा कि दाराशिकोह ने हमारे बापको ज़हर देकर मार डाला है और आप तख़्तपर क़ाबिज़ होगया है। इसी मतलब के लिये शाह शुजा बड़ी फ़ौज लियेहुये दारा के साथ जंग करने के इरादे से आरहा है। मैं यह ख़त आप को लिखनेके लिये मजबूर हुआ हूं; क्योंकि मेरे ख्याल में आपके सिवाय कोई दूसरा शख़्स बादशाह बनाये जाने के लायक़ नहीं है। दारा काफ़िर और बुत-परस्त है, वह दीने इस्लामका दुशमन है। शाह शुजा बेदीन है, क्योंकि वह हज़रत अलीका मुक़ल्लिद और शिया होने की वजह से इस्लामका मुख़ालिफ़ है। मेरे दिलमें कुरान शरीफ़ के लिये ख़ास जोशहै। मैं चाहता हूं कि आपको बादशाह बनाया जावे। तमाम दुनियां जानती है कि मैंने गोशे नशीनी इख़तयार करली है और मैं अपनी जिन्दगी के बाकी दिन मक्के में गुज़ारना

चाहता हूं। मेरी सिर्फ यही अरज़ है कि आपको तख्त नशीन करूं, लेकिन आप मेरे अयालो अतफ़ाल की हिफ़ाज़त करने का ज़िम्मालें और कुरान शरीफ़ की क़सम खायें कि आप इनको आराम से रक्खेंगे। मैं आपको हामिल हाज़ा के साथ एक लाख रुपया रवाना करता हूं। ताकि हम दोनों भाइयों के दरमियान बाहमी उल्फ़त का निशान बाक़ी रहे। आपके जवाब का मुन्तज़िरहूं।

जब मुराद ने इसखतको पढ़ा तो मारे खुशी के जामे में फूला न समाया। उसने फ़ौरन् औरङ्गज़ेब के पास इस मज़मून का एक खत रवाना करदिया कि मैं कुरान शरीफ़ की क़सम खाकर लिखता हूं कि जैसा आप चाहते हैं वैसाही होगा। मैं अपनी फ़ौजको लेकर आप की तरफ़ आताहूं ताकि हम दोनोंभाई मिलकर दारा को हरा रुकें। जब मुरादकी तरफ़ से उसको दिलजमई होगई तो शाही फ़ौजके दूसरे सेनापतियों को, जोकि उस समय दक्षिण में मौजूद थे. इस साज़िश में शरीक करने के लिये हाथ पांव मारे। मीरजुमला छिपा हुआ साज़िश में शरीक था। अगर्चे वह प्रत्यक्ष में शाहजहां का पक्षपाती बना हुआ था। महावतखांने औरङ्गज़ेब की बातों की कुछभी परवाह न की और वह सीधा आगरे चलाआया, जहां से वह काबुलका सूबेदार नियत करके काबुल रवाना कर दियागया दूसरे सेनापतियों ने, यह जानकर कि शाहजहां अभी जिन्दा है, बग़ावत

से इनकार किया मगर औरङ्गज़ेब ने उनसे कुरान की क़समली कि अगर शाहजहां मरगया हो तो वह उसका साथ देंगे। सेनापतियों ने पचास दिनकी मुहलत मांगी कि हम अपने आदमी भेजकर ख़बर मँगवाते हैं कि शाहजहां मर गया है या जिन्दा है। अगर वहां से यह ख़बर आई कि वह मरगया है तो हम तुम्हारे साथ मिलजायँगे। औरङ्गजेब जानता था कि शाहजहाँ जिन्दा है, इसलिये सिपहसालारों को धोखा देनेके लिये इसने मिरज़ा अब्दुल्लाको, जोकि दरयाय नरबदा के घाटका मोहर्रिर था, लिखदिया कि देहली की तरफ़ से जितने आदमी दक्षिणकी तरफ़ आयें, उनको रोक लिया जावे और जामा तलाशी लीजिये; अगर उन में से किसी के पास ऐसी चिट्ठी निकले जिसमें शाहजहां के ज़िन्दा होनेकी ख़बर दर्जहो तो चिट्ठीको जलादिया जावे। इसतरह औरङ्गज़ेब ने उन सिपहसालारों को धोखा दिया। जब पचास दिन गुज़र गये और दूत वापिस न आये, तो सिपहसालारों ने प्रतिज्ञानुसार औरङ्गज़ेब के साथ शरीक होना स्वीकार कर लिया। दक्षिण की तमाम फ़ौज को अपने क़ाबू में करके, औरङ्गज़ेब ने मुरादको भी चिट्ठियें भेजनी आरम्भ करदीं वह कुरान की क़समें खाता कि मेरा इरादा हरगिज़ बादशाह बनने का नहीं है, बल्कि आपको बादशाह बनाकर मक्का चले जानेका है। मुरादका सेनापति शाहबाज़खां इस तमाम

कार्रवाईका शाक़ी था और केवल धोखा ख़याल करता था और मुरादको औरङ्गज़ेबके फन्दे में न फसने का आदेश करता रहा। मगर मुरादने उसकी एक न सुनी। आखिर औरङ्गज़ेब और मुराद दोनों, फौजें लेकर माडों के मुकाम पर आ मिले। औरङ्गज़ेब ने मुराद की अगवानी की और उसके क़दम चूमे। उसको शाह मुराद करके सम्बोधन किया, और आप हाथ बांधकर उसके सामने खड़ा हो गया, इससे मुराद और भी धोखेमें आगया। इधर शाहजहां ने बीमारी से उठकर दोनों लड़कोंको खत लिखे कि मैं ज़िन्दा हूं। तुम अपने २ इलाक़ों को लौट जाओ। मगर औरङ्गज़ेब मुराद को यह कहकर धोखा देतारहा कि यह तमाम चिट्ठियें जाली हैं बादशाह मरगया है, दारा उसकी मौत को छुपारहा है। उधर शाइस्ताखां और मीर जुम्ला का लड़का मुहम्मद अमीनखां, जोकि औरङ्गज़ेब के लिये जासूसों का काम कररहे थे, आगरे में मौजूद थे।

शाइस्ताखां, जिसकी औरत के (धर्मको) शाहजहां ने खराब कियाथा, बदले के जोशमें भराहुआ था, वह चाहता था कि, शाहजहाँ को मज़ा चखावे। प्रत्यक्षमें तो वह शाहजहाँ का मित्र बना हुआ था, मगर छिपा२ औरङ्गज़ेब से मिलाहुआ था। इसने झूंठ ही लिखमारा कि शाहजहाँ मरगया है, तुम सुलेमान शिकोह के आगरा वापिस आनेसे पहिले, आगरे में पहुँचजाओ

और किलेपर कृबज़ा करलो, यह ख़त दाराके हाथ आगया। दारा ने शाइस्ताखाँ को कैद करलिया, करीब था कि इसको मार डाले कि औरङ्गज़ेब की बहन रौशनआराने जोकि खुद भी जासूसों का काम कर रही थी, दाराको समझाया कि शाइस्ताखां बेकुसूर है और किसी ने इसके नामसे जाली ख़त लिखदिया है। दारा जोकि बिलकुल सीधासाधा था इस लड़की के धोखे में आगया। उसने शाइस्ताखाँ को छोड़ दिया, अगर्चे बाद में दारा को, अपनी इस मेहरबानी पर बहुत पछताना पड़ा। शाहजहाँ की तमाम फ़ौज औरङ्गज़ेब के जासूसों से भरी हुई थी, जोकि ज़रा २ सी बातों को औरङ्गज़ेब तक पहुंचाते रहते थे। इनमें एक ख़लीलुल्लाखाँ भी था। जब शाहजहां ने देखा कि बाग़ी लड़के किसी तरह बग़ावतसे नहीं रुकते, तो उसने दाराको फ़ौज तैयार करने का हुक्म दिया। फ़ौज तैयार होगई. मगर शाइस्ता खाँ और ख़लीलुल्लाखां जैसे सेनापति जिन को औरङ्गज़ेब ने रिश्वतें देरक्खी थीं, वक्त पर दग़ा करगये, फ़ौज तैयार होगई। शाहजहाँ ने खुद मैदान जंग में जाकर लड़नाचाहा, मगर ख़लीलुल्लाखाँ को ज्यूं ही इस बातका पता लगा उसने दाराके कानमें फूंक मारदी कि अगर बादशाह मैदानमें जाकर लड़ेगा तो फ़तेह उसके नाम से होगी, आपको क्या मिलेगा; अच्छाहो कि मैदान आप अपने हाथ में रक्खें और बादशाह को वहाँ जाने से रोकें। दारा इसके फन्दे में फँसगया और शाहजहाँको

मैदान में जानेसे रोकदिया। शाहजहाँ चूंकि दाराको अत्यन्त प्यार करता था, इसलिये उसने दाराकी बात को मानलिया और तमाम अधिकार अपने बेटेको दे, इसको रवाना किया। दाराने दरयाये चम्बलपर पहुंच कर, दरया के तमाम नाके रोकलिये। औरङ्गज़ेब की फ़ौजको पार करना मुशकिल होगया। इतने में उसको पतालगा कि राजा चम्पावत के इलाके मेंसे होकर नदी पार करना सहल होगा। राजा चम्पावत से ख़तो किताबत शुरु हुई। औरङ्गज़ेब ने उसके साथ बड़े २ वायदे किये। राजा उसके जालमें फंसगया और उसको फ़ौज को अपने इलाके से गुज़रने और दरयाय चम्बलको पार करने की आज्ञादेदी। औरङ्गज़ेब ने राजा चम्पावतकी मदद से दरया को पार किया। जब उसने देखा कि फ़ौज पार होचुकी है, तो दूसरे दिन प्रातःकाल उसने राजाको बुला भेजा, राजा खुश था कि अब हम को इनाम आदि से मालामाल किया जावेगा औरङ्गज़ेब ने हुक्म दिया कि राजा चम्पावत को पकड़लो और जिस रास्तेसे फ़ौज़को गुज़रना है उस रास्ते में राजाका सर काट कर डालदो ताकि मुहूर्त शुभहो। राजाको मारकर उसका सर रास्ते में डाल दिया गया। इधर जब दाराको पता लगा कि चम्पावतने औरङ्गज़ेब को रास्ता देदिया है तो बहुत गुस्सा हुआ। उसने फ़ौरन हुक्म दिया कि बारह हज़ार सिपाही अभी औरङ्गज़ेब के साथ लड़ने के लिये रवाना होजावें, मगर

ख़लीलुल्लाखाँ दग़ाबाज़ ने अशुभ घड़ी का बहाना करके फ़ौज रवाना करने में देरकी। वह चाहता था कि औरङ्गज़ेब अच्छी तरह फ़ौजको ठहरालेतो जाना ठीक होगा। इसमें शक नही कि दारा अगर इन दगाबाज़ों के कहने में न आता तो वह औरङ्गज़ेब का बिलकुल सत्यानाश करदेता, क्योंकि उसकी फ़ौज कुछ अच्छी नहीं थी और वह दिनरातके सफर से थकी मांदी थी। मगर ख़लीलुल्लाख़ाँ ने औरङ्गज़ेब के साथ मेल कर रक्खा था, कि आप जब लड़ाई के लिये बिलकुल तैयार होजावें तो तीन तोपें दाग़देना, उस वक्त मैं दारासे टालमटोल करता रहूंगा। जबही दारा लड़ाई के लिये तैय्यार होता ख़लीलुल्लाख़ाँ टालदेता कि अभी शुभ मुहूर्त्त नहीं वर्षा हातीहै आदि। इधर इन टालमटोलों से औरङ्गज़ेब को पूरा मौक़ा मिलगया। इसने अपनी फ़ौज को खूब तयार करलिया। जब देखा कि अब सब काम ठैसहै तो उस ने रातके समय तीन तोपें छोड़ीं, जिससे ख़लीलुल्लाखाँ को पता लगगया कि अब औरङ्गज़ेब लड़ाई के लिये तैयार है। दूसरे दिन लड़ाई शुरू हुई। दाराकी फ़ौज, अगरचे नमक हरामों और दगाबाज़ों से भरी हुई थी, मगर फिर भी उसके कुछ सिपाही ऐसे जान तोड़कर लड़े कि औरङ्गज़ेब की फ़ौज के छक्के छुटगये और वह भाग निकली। उसवक्त ख़लीलुल्लाखांने दारा को दग़ादी। उस के पास जाकर कहने लगा कि अल्लाताला की मदद से मैदान मार लिया है

औरङ्गज़ेब अब हमारे हाथमें आजावेगा, आप हाथी परसे उतरकर घोड़े पर सवार होजावें ताकि हम जल्दी से औरङ्गज़ेब को गिरफ्तार करसकें। दारा इस फ़रेब को न समझा। वह घोड़े पर सवार होगया इधर जब दारा की फौजने, दाराका हाथी खाली देखा तो सबने समझा कि दारा मारागया। फ़ौज़ बेदिल होगई और भाग निकली, जीताहुआ मैदान हाथसे जातारहा। जब दाराने ख़लीलुल्लाखां की बेईमानी को देखा तो उस को बड़ा क्रोध आया, और उसने ख़लीलुल्लाखां को बुला भेजा, मगर ख़लीलुल्लाखां उसवक़ तक औरङ्गज़ेब के पास चलागया था। दारा हारा और आगरे को वापिस लौट गया शाहजहां को इस हार से बड़ा ही दुःख हुआ। दाराने नये सिरे से फ़ौज भरती करनी शुरूकी, परन्तु औरङ्गज़ेब ने दारा को कुछ भी मुहलत न दी, और वह आगरे की तरफ़ रवाना होपड़ा। अब औरङ्गज़ेबको सिर्फ़ सुलेमान शिकोह और राजा जैसिंह की फ़ौजका डर शेष था, जोकि शाहशुजा के पीछे पड़ीहुई थी। उसने जयसिंह और दिलेरखां को लिखा कि चूंकि दाराकी हार हुई है, उसका ख़याल छोड़दो। सुलेमान शिकोह को गिरफ़तार करके मेरे पास रवाना करदो। जयसिंह और दिलेरखां दाराकी हारका हाल सुनकर हैरान थे कि क्या किया जावे। वह सुलेमान शिकोह पर हाथ डालने के लिये तैय्यार नहीं थे, मगर साथ ही वह दाराकी खातिर मुफ्त जान देनेको भी अच्छा नहीं

समझते थे। उन्होंने औरङ्गज़ेबकी चिट्ठी सुलेमान शिकोह को दिखादी। सुलेमान अपने सेनापतियों से अविश्वासी होगया और वह अविश्वासी कुछ चन्द आदमियों को साथ लेकर कश्मीरकी तरफ़ भाग गया। इस तरफ़ सुलेमान शिकोह की तमाम फ़ौज भी औरङ्गज़ेबके साथ जा मिली। दारा को अगर पहिले कोई आशा थी, तो वह भी जाती रही। शाहजहाँने दारा को देहली जाने और वहां के क़िले को सँभालने की इजाज़त दी, और देहली के क़िलेदार के नाम ख़त लिखा कि क़िले की कुंजियां दारा को देदो, मगर देहलीवालों को औरङ्गज़ेबने पहिले ही रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया था जब दारा देहली पहुंचा तो देहली के दरवाज़े अपने विरुद्ध बन्द पाये अब उसको इसके सिवाय कुछ न बन पड़ा पञ्जाब को भाग जावे। लाहौर पहुंच कर उसने नये सिरे से फ़ौज भरती करनी शुरू की।

—:o:—

औरङ्गज़ेब का पिता को दुःखदेना और अत्याचार करना॥
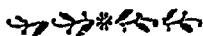
पीछे दिखाया जा चुका है कि औरङ्गज़ेबने क़ौल क़रार होने पर भी राजा चम्पावत को, जिसने कड़े वक़्त पर उसकी मदद की थी, पकड़कर मारडाला था।

अब जब दारा उसके सामने से भाग गया तो औरङ्ग-ज़ेब को कुछ फुरसत मिली; वह झट आगरे पहुंचा। शहर का घेरा लिया। मगर वहाँ था ही कौन ? जो उसके मुक़ाबले में आता, सिर्फ़ क़िले के अन्दर चन्द सिपाही थे, जिन्होंने क़िला बन्द करलिया और औरङ्गज़ेब का सामना करने को तैयार होगये औरङ्गज़ेब ने यह देख कर कि लोग उसकी तरफ़ से अविश्वासी होरहे हैं, क्यों कि उसने बादशाह के जीते जी तख़्तपर क़बज़ा करने की ठानी थी, धोखा और फ़रेब से काम करना शुरू किया और शाहजहां को मुआफ़ी के ख़त भेजने शुरू किये। इधर क़िले के आदमियों को जोड़ तोड़ करके अपने साथ मिलालिया और प्रकट यह किया कि मैं बादशाह से मिलकर तमामबातों का फ़ैसला करके लौट जाऊंगा। मुद्दततक मुलाक़ात को बहानोंमें टालता रहा। आख़िर जब देखा कि क़िलेपर अधिकार होगया है; तो उसने बादशाह को लिख भेजा कि मैं नहीं आसकता, मेरी जगह मेरा लड़का सुलतान मुहम्मद आप की मुलाक़ात को आता है सुलतान मुहम्मद को समझा दिया कि दरवाज़े में घुसते ही जो सबसे पहिले सामने आये मारडालना और बादशाह पर क़बज़ा कर लेना। सुलतान मुहम्मद क़िले में गया, जो सामने आया मारडाला गया। शाहजहां ने जब यह नक़शा देखा; नाहैरान रहगया चूंकि इस समय सिवाय ख्वाजासरा अबदुल्ला खाँ और उसकी औरतों के जो

गिनती में दोहज़ार थीं, कोई मौजूद नहीं था, इसलिये उसने इरादा किया कि दुष्टोंके साथ लड़ना हुआही मर- जावे। इधर अब औरङ्गज़ेब को पता लगा कि सुलतान मुहम्मद ने रनवास परभी कब्जा कर लिया है, तो झट उसको लिखा कि कुंजियां लेलो और बादशाह को ज्यादा तंग न करो। सुलतानमुहम्मदने किले की तालि- यां लेली और शाहजहां को छोटेसे कमरे में बन्द करके चारों तरफ़ डबल पहिरा लगा दिया। शाहजहांने औ- रङ्गज़ेब को फिर लिखा कि एक दफ़ा मुझसे मिल- जाओ, मगर इस बार औरङ्गज़ेब ने ख्वाजासरा एत- बारखाँ को विशेष आज्ञा देकर रवाना किया। एतबार खाँ शाहजहाँ का गुलाम था मगर शाहजहां ने उसको औरङ्गज़ेब के सुपुर्द कर दिया था इस नमकहराम ने शाहजहाँ को और भी तंग किया, और उसको एक तङ्ग तारीक कमरेमें बन्दकरके, तमाम खिड़कियें और दर- वाज़े चुनवादिये सिर्फ़ रोशनी और भोजन अन्दर जाने को कुछ रास्ता खुला रक्खा। बाद को अपने बाप को अपराधी साबित करने को औरङ्गज़ेब ने शाहजहाँ के नामसे कई जाली चिट्ठियां दारा के नाम लिखीं कि तुम आगरे से ज्यादा दूर मत जाना। औरङ्गज़ेब और मुराद मुझ से मिलने आयेंगे, मैं उन दोनों को मार- डालुंगा, तुम आकर तख्त को सम्भाल लेना। और- ङ्गज़ेब ने मक्कारी से इन चिट्ठियों को, जो उसकोही हाथ से लिखी गई थीं, ठीक उस समय अपने सामने

पेश करने का तरीका निकाला जब कि सब दरबारी मौजूद हों, और ज़ाहिर यह किया कि-यह चिट्ठियां पकड़ी गई हैं। औरङ्गज़ेबने इन चिट्ठियों को सबके सामने पढ़ा और बज़ाहिर उसपर भय छा गया उसने अमीरों और वज़ीरों से पूंछा कि मुझे शाहजहां से मिलने के लिये जाना चाहिये या नहीं। पहिले अगर शाहजहांसे किसी को हमदर्दी थी तो इन जाली चिट्ठियों को सुनकर वह भी जातीरही। सबने एक ज़ुबान होकर कहा कि आपका शाहजहां से मिलने जाना भय की बात है। औरङ्ग़ज़ेबने रोती सूरत बनाकर एक ख़त शाहजहांके नाम लिखा कि मेरा इरादा आपको हानि पहुंचानेका नहीं है, सिर्फ़ दारा को जिसने आपको दुखी कररक्खा था, दण्ड देने का था, मैं दारा को पकड़कर आपके पास रवाना करूंगा और खुदअपने इलाक़े को लौटजाऊँगा। मेरी तरफ से यदि कोई अनुचित व्यवहार हुआ हो तो आप क्षमा करें। यह ख़त सबके सामने पढ़कर सुना दिया गया मगर औरङ्ग़ज़ेब की हरगिज़ यह इच्छा नहीं थी कि शाहजहां को यह ख़त मिलै। यह केवल मक्कारी से अमीरों वज़ीरों के दिल अपनी ओर खींचना चाहता था, और इसप्रकार के कपटों से उसको विशेष लाभहुआ जब उसने देखा कि लोगोंने शाहजहां का साथ छोड़ दिया है, और शाहजहां अब कठिन बन्दीगृह में है, उसके निकलने के तमाम रास्ते बन्द हैं तो उसने

दाराकी जड़ उखाड़ने और मुराद को भी निराशता दिखाने के विचार करने शुरू किये। अवतक वह मुराद को यही धोखा देरहा था कि, मैं आपको तख्त पर बिठाकर मक्के चला जाऊंगा। वह उसके सामने कुरान की कसमें खाता और उसके क़दमों में गिरकर सलाम करता, हाथ बाँधे उसके सामने खड़ा रहता, अपने रुमालसे उसका पसीना पोंछता और नौकरोंकी तरह उसकी सेवा करता, गोया कि मुराद बादशाह था और औरङ्गजेब उसका गुलाम। मुराद के दिलमें, भाई के ऐसे वर्ताव को देखकर, कब यह सन्देह पैदा हो सकता था कि वह एक दिन उसको धोखा देगा। मगर मुराद का ख्वाजासरा, शहबाज़खाँ, जोकि बड़ा वफ़ादार और बुद्धिमान् पुरुष था, औरङ्गज़ेब की मक्कारी को ख़ूब जानता था। उसने कई दफ़ा चाहा कि औरङ्गज़ेब को मौक़ा पाकर मार डाले। उसने मुराद से भी कहा कि आप औरङ्गज़ेब का एतबार न करें मगर मुराद ऐसा मूर्ख और बादशाह बनने के नशे में चूर था कि उसका शहबाज़खाँ की बातें बुरी लगती थीं और वह उसकी तरफ़ से मुंह फेर लेता था। एक दिन मुराद ने औरङ्गजेब से कहा कि अब, चूंकि मैदान साफ़ होगया है, अब तख़्त नशीनी की रसम पूरी होजाना चाहिये। औरङ्गज़ेब ने अत्यन्त कपट से प्रसन्नता प्रकट की, और फ़ौरन जुलूस की तैयारी का हुक्म देदिया। कि मुग़ल बादशाह ज्योतिषियों के कहने पर

ज्यादा चलते थे, और हरकाम को शुरू करने से पहले शुभ लग्न को देखलिया करते थे। औरङ्गज़ेब मुसलमान होने पर भी इस वहम से खाली नहीं था। उसने दरबारके ज्योतिषियों को गांठलिया और उनसे कहा कि तुम अपने ज्योतिषके ज़रिये यह बताओ कि अभी कुछ दिन ख़राब हैं, तख़्तनशीनी अभी नहीं होनी चाहिये चुनांचे उधर जुलूस की तैयारी होरही थी, इधर औरङ्गज़ेब ने ज्योतिषियों को बुलाकर नियमानुसार शुभलग्न देखने को कहा। सबने अर्ज़ की कि अभी कुछ दिन यह रस्म पूरी नहीं होनी चाहिए। औरङ्गज़ेब ने हाथ जोड़कर, मुराद के पास जाकर ज्योतिषियों का कहा हुआ निवेदन किया। वह तो था ही मूर्ख, उसने कहा अच्छा अभी न सही। मगर औरङ्गज़ेब कुछ और ही सोच रहा था। उसने प्रिय भाई से कहा कि वेहतरहो कि इतने में हम दारा को गिरफ़तार करलें ताकि निर्भय आप राज्य करें। मुरादने भी इस तजवीज़ को पसन्द किया, फ़ौरन फ़ौज तैयार होगई, और दारा के पीछे चल पड़ी। जब मथुरा पहुंची तो ज्योतिषियों के कहने के अनुसार बुरी घड़ी गुज़र गई और शुभलग्न आगई। औरङ्गज़ेब ने मथुरा में ही कैम्प लगा दिया, और बड़े ज़ोर शोर से मुराद की तख्तनशीनी की तैयारियां शुरू हुईं। खूब महफ़िल सजाई गई। मुराद के लिए तख्त और ताज हाज़िर थे। औरङ्गज़ेब उसके

पीछे खड़ा मोरछल हिला रहा था, बार-बार रूमाल से उसका पसीना पोंछता और अत्यन्त आधीनी से बातें करता, गोया कि वह एक तुच्छ सेवक था। रात को शराबोकबाब की महफ़िल गर्म हुई। औरङ्गज़ेबने मुराद को अपने कैम्प में बुलाया, और ख्वाजेसराओं और दूसरी औरतों को समझा दिया कि मुराद को खूब शराब पिलाओ। मुराद शराब के नशे में चूर होगया और आधीरात को सोगया। उसका वफादार ख्वाजे सरा शहबाज बराबर नंगी-तलवार का पहरा देता रहा। आधीरात के समय औरङ्गज़ेब ने मुराद की जान लेने के लिए शैतानी छल शुरू किया। सबसे पहिले जरूरी था कि शहबाज को मुराद के सरहाने से अलग किया जावे। औरङ्गज़ेब ने मुराद के ख़ेमे के दरवाजे पर चार मज़बूत सिपाही नियत कर दिये, और उनको सब ऊंच नींच समझादी। फिर एक सफ़ेद कुरता पहने, सादा टोप सिरपर रक्खे बड़ी गम्भीरता से मुराद के ख़ेमे के दरवाजे के अन्दर गया। वह कुछ कहने आया है मानो यह देखकर कि मुराद सो रहा है और अपने प्रिय भाई की नींद में बाधा डालना नहीं चाहता, उसने शहबाज-खाँ को उङ्गली से इशारह किया, जिससे मालूम होता था कि वह उसके कान में कुछ ज़रूरी बात कहना चाहता है। शहबाज फ़ौरन दरवाजेके बाहर आया। दरवाजे पर चार सिपाही पहिले ही मौजूद थे, उन्होंने फौरन शहबाज का काम तमाम कर दिया और शोर नहीं होने

दिया। जब वफादार शहबाज़ख़ाँ भाग गया, तो अब मुराद का कोई भी सहायक नहीं रहा, मुराद की तलवारें और खंजर उसके सरहाने पड़ी थीं। औरङ्गज़ेबने मुराद को इन दोनों हथियारों से रहित करना चाहा। उसने अपने बेटे मुहम्मद आजम को, जिसकी आयु उस दिन १५ जून सन् १६५८ ई० को केवल ४ साल ७ दिन की थी, अपने पास बुलाया और गोदी में बिठाकर कहा कि अगर तुम चुपके से अपने चचा के सरहाने से तलवार उठा लाओ तो मैं तुमको यह चीज़ दूँगा। औरङ्गज़ेब ने यह मक्कारी इस लिये की थी कि अगर ईश्वर न करे मुराद जाग पड़े तो यह समझले कि एक कम उम्र बच्चा उसकी तलवार से खेल रहा है और उस को शुबा करने की गुंजायश न रहे। बच्चा तलवार को उठा लाया; इस ही तरह दूसरी दफ़ा उसको लालच देकर फिर अन्दर भेजा कि वह खंजर भी उठा लाये; लड़का खंजर भी ले आया। अब मुराद बिलकुल निःहत्था रहगया, छै आदमी अन्दर गये और उन्होंने उसके पाँव में बेड़ियाँ डालना शुरू कीं मुराद चौंक पड़ा। उसने अपना हाथ सरहाने की तरफ़ अपनी तलवार उठाने को बढ़ाया; मगर तलवार पहले ही गायब थी, सर्द आह भर कर बोला ? क्या इसी धोखे के लिये मुझसे वायदा किया गया था और कुरान की क़समें खाई जाती थीं। मगर वहां कौन सुनता था। औरङ्गज़ेब ने प्रातःकाल ही मुराद को बन्द हौदे में सवार

करवा देहली की तरफ़ रवाना कर दिया। दूसरा हाथी उसी वक्त आगरे की तरफ भेजा था कि किसी को पता न लगे कि मुराद आगरे की तरफ़ जाने वाले हाथी पर है या देहली की तरफ़ जाने वाले हाथी पर। मुराद जबरदस्त कैद में देहली पहुंचा। हौदे का परदा उठा दिया गया। मुराद कैदियों की तरह शहर में घुमाया गया। बाद में सलीमगढ़ के क़िले में कैद कर दिया गया औरङ्गज़ेब ने हुक्म दिया कि इसको पानी की बजाय रोज पोस्त का पानी पिलाया जावे ताकि वह जल्द ही होशोहवास खोकर पागल होजाये। चुनांचे उसके साथ वैसा ही अन्याययुक्त बर्ताव जारी रक्खा गया। यहाँ तक कि उसको औरङ्गज़ेब ने बाद में बेरहमी से मार डाला।

औरङ्ग़ज़ेब का भेड़ियापन, निडरपन और अन्याय।

इधर शाहजहाँ कैद था, उधर मुराद से पीछा छूटा शाहशुजा बङ्गाले में मारा २ फिरता था. दारा का बेटा सुलेमान शिकोह कश्मीर की शरण में था और दारा लाहौर के क़िलेमें था। औरङ्गज़ेब ने फौरन् अपने आप को बादशाह मशहूर करदिया और एक जबरदस्त फौज लेकर पञ्जाब की ओर चल पड़ा। दारा ने बहुत सी फौज जमा करली थी, औरङ्ग़ज़ेब ने इस जगह भी मक्कारी से काम लिया। उसने दारा के सेनापति,

दाऊदख़ाँ की ओर से एक जाली चिट्ठी तैयार कराई, जिसमें औरङ्गज़ेब को लिखा था कि "आप कुछ फ़िकर न करें, जब आप लाहौर पहुंचेंगे, तो मैं दारा का सर आपकी सेवा में उपस्थित कर दूंगा" औरङ्गजेब ने यह जाली ख़त इस तरह से रवाना किया कि वह दारा के हाथों में पड़गया। दाराने ज्यों ही इस ख़त को पढ़ा, वह दाऊदख़ाँ और दूसरे सरदारों से फिरगया। अब दाऊदख़ाँ को इस बात का पता लगा तो वह बहुतही दुःखित हुआ। वह फ़ौरन समझगया और रोकर कहनेलगा कि यह ख़त बिलकुल जाली है, आप इसपर विश्वास न करें। दारा ने दाऊदख़ाँ की बात को मानलिया। लेकिन उस को अपने अफ़सरों की तरफ़ से फिर भी सन्देह बाक़ी रहा। औरङ्गज़ेब ने जब अपनी पहिली चालको निकम्मा पाया, तो उसने झट एक ख़त दाऊद के नाम लिखा और इस तरह रवाना किया कि वह दारा के हाथ में पड़जावे। उसका लेख यह था कि—"आपने इतनी देर क्यूं लगाई है, अभी तक आपने दारा को गिरफ़्तार करके मेरे पास क्यूं रवाना नहीं किया" जब यह ख़त दारा के हाथ में पड़ा, फिर तो वह और भी घबड़ागया, समझा कि मेरी फ़ौज के तमाम अफ़सर औरङ्गज़ेब से मिले हुए हैं। वह कुछ सिपाहियों को साथ लेकर लाहौर से मुलतान पहुंचा। औरङ्गज़ेबने लाहौर पर कबज़ा कर लिया और लाहौर से मुलतान की तरफ़ दारा के पीछे गया। दारा को मुलतान भी छोड़ना,

पड़ा, उसने भागकर जाने की ठानी। उधर औरङ्गज़ेब को खबर मिली शुजा आगरे पर कब्ज़ा करने को बङ्गाल से चल पड़ा है। उसने बहादुरख़ाँ को दारा के पीछे छोड़ दिया, और स्वयं आगरे की तरफ़ चल पड़ा। संयोग से राजा जयसिंह भी अपनी फ़ौज के साथ आगरे की तरफ़ शाहजहां की मदद के लिये जारहाथा। मार्ग में दोनों की भेंट होगई। औरङ्गज़ेब के साथ उस समय केवल तीन आदमी थे, बाक़ी फ़ौज पीछे थी। राजा जयसिंह के आदमियों ने चाहा कि अब मौक़ा है औरङ्गज़ेब को मारडाला जावे तो बहुत ही अच्छाहो। राजा जयसिंह अगरचे शाहजहाँ का तरफ़दार था, मगर चूंकि दारा की तरफ से उस को कुछ सदमा पहुंचा हुआ था, इसलिये उसने औरङ्गज़ेब का मारने से इन्कार कर दिया कि राजपूत इस तरह निहत्ते आदमी पर कभी तलवार नहीं उठा सकता। औरङ्गज़ेब राजा जयसिंह के ऐन क़ब्ज़े में था, अगर चाहता तो एक ही हाथ से उसका सर काटडालता, मगर उसने ऐसा नहीं किया। औरङ्गज़ेब ने अपनी हालत नाज़ुक देखी, समझा कि काम बिगड़गया, पहिलेकी तरह कपट से काम लिया। राजा जयसिंहके पास पहुँचकर बोला "राजाजी! मैं तो मुद्दत से आपकी खोज में था, ईश्वर की कृपा से आज दर्शन हुए। दारा के पीछे तो मैंने बहादुरखाँ को लगादिया है; वह उस को बिना गिरफ़्तार किये नहीं छोड़ेगा, आप सांभर के सूबे पर अधि-

कार करलें, आपका वहाँ जाना जरूरी है"। यह कहकर औरङ्गज़ेब ने अपनी कीमती माला गले से उतारकर राजा जयसिंहके सुपुर्द की। जयसिंह दारा का दुश्मन था, उसको क्या मतलब दारा मरे चाहे शाहजहां, वह सीधा साँभर की तरफ़ रवाना होपड़ा। इस तरह औरङ्गज़ेब ने अपनी जान बचाई, बहादुरख़ाँ बराबर दाराका पीछा किये गया। दारा भक्कर पहुंचा। वहां भी अपने क़दम जमते न देखकर हज़ारों मुसीबतों को झेलता हुआ, अहमदाबाद पहुँचा। अहमदाबाद के दरवाज़े बन्द पाये। फिर गुजरात की तरफ़ भाग निकला; मगर उधर बहादुरख़ाँ डबल कूंच करता हुआ उसके पीछे आरहा था। आखिरकार दारा घिरगया और दोनों के बीच घोर संग्राम हुआ। दारा की फौज हारी; मगर वह जान बचाकर भाग निकला। गुजरात के इलाके से निकल कर वह चाहता था कि फ़ारस चलाजावे उसने सरदार जीवनख़ाँ की मदद चाही। जीवनख़ाँ को दाराने दो दफ़ा मौतके मुंहमे बचाया था, क्योंकि बादशाह ने इसको हाथी के पाओंके तले रुँदवाने का हुक्म दिया था। दारा को निश्चय था कि जीवनखां अवश्य उसकी सहायता करेगा। जीवनखाँ ने प्रत्यक्ष में तो उसका बड़ा सत्कार किया, परन्तु फिर धोके से कैद कर, बहादुरखां के हवाले कर दिया। यह देखकर उसकी प्यारी स्त्री ने, जिसने तमाम विपत्तियों में भी उसका साथ न छोड़ा था, आत्मघात करडाला। दारा कैदी होकर

बाल बच्चों सहित देहली पहुंचाया गया। औरङ्गज़ेबने निहायतही दुर्दशाके साथ इसको गलीकूचोंमें अपमानित किया, बाद को खिज़राबाद के क़िले में क़ैद करदिया। चूंकि लोग दारा से मुहब्बत करते थे, इसलिये और-ङ्गज़ेब ने चाहा कि लोगों का जोश ज़रा कम होजावे। एक दिन औरङ्गज़ेब ने दारा के पास एक आदमी भेजा, और पूंछा कि अगर तुम मुझे इस तरह क़ैद करलेते, जिस तरह तुम मेरी क़ैद में हो, तो तुम मेरे साथ क्या वर्त्ताव करते। दारा ने राजसी शब्दों में उत्तर दिया कि-"तुम्हारे जिस्म के चार टुकड़े करके शहर के चारों कोनों में लटकवा देता।" यह सुनकर औरङ्गज़ेब का खून उबलपड़ा। उसने हुक्म दिया कि कौन दारा का सर काटकर मेरे पास लावेगा। उसी वक्त नाज़िरवेग, मक़बूल, फ़तेहबहादुर, मशहूर, मुहरन आदि, जो कि गुलाम और गुलामों की औलाद थे उस कामके करने को रवाना होगये। इन राक्षसों ने, जब कि दारा अपने कमरे में टहल रहा था, पकड़ लिया और ज़मीन पर डालकर इस तरह उसका सर काट लिया जिसतरह एक कसाई भेड़का सर काट लेता है। औरङ्गज़ेब ने हुक्म दिया कि सर को धोकर और पगड़ी बांधकर रकाबी में रखकर मेरे पास लाओ, जिससे मैं पहचान सकूं कि यह दारा का सर है या और किसी का। रात को आठबजे थे, औरङ्गज़ेब कुरसी पर अपने बाग़में

बैठा था कि इन दुष्टों ने तश्तरी में दारा का सर रख-कर हाज़िर किया। औरङ्गज़ेब ने चिराग़ की रौशनी में सरको पहचाना, और ज़मीनपर रखवाकर अपनी तलवार से तीनचार ठोकर लगाई और अत्यन्त घृणित शब्दों में कहा कि "क्या वही दारा है जो मुग़लिया राज्य का बादशाह बनना चाहता था, लेजावो इसको मेरे सामने से। दाराके धड़को उसने हुमायूं के मकबरे में गड़वा दिया। मगर सरको एक सन्दूक में बन्द कर के एतबारखां के पास जो कि शाहजहां के पहिरे पर मुकर्रिर था और जिसके सुपुर्द शाहजहां के भोजन का प्रबन्ध था, भेजदिया और कहा जिस समय शाह-जहां खाना खाने लगे, उसके सामने यह सन्दूक रख देना और कह देना कि औरङ्गज़ेब ने आपके लिये कुछ सौग़ात भेजी है। चुनांचे एतबारखाँ ने ऐसा ही किया। जब शाहजहां खाना खाने लगा, तो एतबारखां ने वह ख़ूबसूरत छोटा सन्दूक, जिसमें दारा का सर रक्खा था, शाहजहां के सामने रखदिया कि आपके बेटे ने आप के लिये कुछ सौग़ात रवाना की है। शाहजहांने कहा, ख़ुदा मेरे बेटे को चिरायु करे जो इस संकट के समय भी अपने बाप को नहीं भूला। यह कहकर उस ने सन्दूक का ढकना उठाया, मगर ज्यूंही उसने देखा कि उसमें दारा का सर है, वह चीख़मार कर मेज़पर गिरपड़ा और उसके दांत टूटगये। दारा की बड़ी बहन भी दुःख से मूर्छित होगई। तमाम महल में रोना पीटना

पड़गया। शाहजहां को उठाकर अन्दर लेगये। जब उसको चेत हुआ, तो उसने अपनी डाढ़ी नोचनी शुरू की। तमाम चेहरा लोहू लुहान होगया। एतबारखाँने इन तमाम बातों का औरङ्गज़ेब से जाकर ज़िकर किया। वह सुनकर बहुत ही खुश हुआ। चुनांचि इस खुशी में उसने और उसकी दुष्टा बहिन रोशनआरा ने उस रात को बड़ा आनन्द मनाया। औरङ्गज़ेब ने दारा का सर मुमताज़महल के रौज़े में दफ़न करवा दिया।

—:○:—

औरङ्गज़ेब की खूँख्वारी।

पीछे लिखा जा चुका है कि दारा का बेटा सुलेमान शिकोह, जिसने शाहशुजा को शकिस्त देकर भगा दिया था, अपने सेनापतियों की नमकहरामी से डर-कर काश्मीर को भाग गया था। वह अभीतक काश्मीर में ही था, जब औरङ्गज़ेब दारा का खून पीचुका तो उसने सुलेमानशिकोह का काँटा भी दिल से निकालना चाहा। चुनाचे उसने कश्मीर के राजा को लिखा कि सुलेमानशिकोह को मेरे पास हाजिर करदो वरना अभी फ़ौज लेकर चढ़ आऊंगा और तुम्हारी जानो-माल की खैर नहीं होगी। महाराजा कश्मीर ने जवाब दिया कि बेहतर है कि मैं माराजाऊं और मेरा राज्य भी नष्ट होजावे, बनिस्बत उसके कि मैं एक

शख्श को जिसने मेरी शरण ली है, शत्रु के हवाले कर दूं। मुझे औरङ्गजेब की धमकियों की कुछ परवा नहीं है। औरङ्गजेब को याद रखना चाहिये कि जिस राजा ने, उसके बाप शाहजहां की भेजी हुई ३०००० तीस हज़ार सवार और एक लाख प्यादा फ़ौज की नाक काट ली थी वह उनके सर भी काट सकता है। औरङ्गजेब इस जवाब को सुन कर चुप रह गया। मुनासिब मालूम होता है कि इस जगह पर शाहजहाँ की कश्मीर पर चढ़ाई का ज़िकर कर दिया जावे। शाहजहाँ ने कश्मीर को जीतनेके लिये एक बड़ी फ़ौज भेजी। महाराजा कश्मीर ने सामना करने की जगह पीछे हटजाना मुनासिब समझा। जब तमाम फौज पहाड़ों में घुसगई, तो राजा ने आगे और पीछे से पहाड़ी नाके बन्द कर लिये और चारों ओर से रसद बन्द करदी। शाही फौज न आगे जा सकती थी न पीछे हटसकती थी बहुतसा हिस्सा मारागया आखिर मुक़ाबिले से घबड़ाकर शाही फ़ौजके सेनापति ने सुलह का सन्देसा भेजा। महाराजा ने कहा सुलह मंजूर है बशर्ते कि तमाम सिपाही अपने २ हथियार रख कर नाक कटवाते जावें। फ़ौज ने जान खोने की बजाय हथियार और नाक खोने पसन्द किये। एक २ मुसलमान सिपाही सामने आता, हथियार रखदेता और राजा के सिपाही उसकी नाक काट कर छोड़ देते। इस तरह राजा ने तमाम मुसलमानों की नाकें काट कर देहली

भेजदिया शाहजहाँ इस घटना को देखकर बड़ा हैरान हुआ। इसके बाद उसने कभी भी कश्मीर पर चढ़ाई करने का इरादा न किया।

महाराजा ने औरङ्गज़ेब को इसी की याद दिलाई। औरङ्गज़ेब ने देखा कि लड़ाई से मतलब हासिल नहीं होसकता इसलिये उसने स्वभावानुसार कपट से काम लेना चाहा। महाराजा का लड़का बड़ा बदचलन था। महाराजा ने उसको उसके कुकर्मों से रोका था, इसलिये वह बिगड़ बैठा। औरङ्गज़ेब ने उस को गाँठलिया और कहा कि अगर तुम सुलेमान शिकोह को मेरी सुपुर्द करदो तो मैं तुम को गद्दी पर बिठालने में सहायता दूंगा। इस नालायक़ ने सुलेमान को पकड़वाने की तैयारी की, सुलेमान को भी पता लगगया। इसने काशग़र के रास्ते चीन को भागजाने का इरादा किया, मगर राजा के लड़के ने कुछ सिपाहियों के साथ इसे पकड़ लिया और औरङ्गज़ेब के सुपुर्द करदिया जब महाराजा को अपने बेटे की इस हरकत का पतालगा तो वह बड़ा दुःखी हुआ। अपने कुपूत बेटे की बेईमानी पर उसको इतना दुःख हुआ कि वह कुछ दिनोंही में मरगया औरङ्गज़ेब ने सुलेमान शिकोह को अपने सामने बुलाया ताकि देखले कि यह सुलेमान शिकोह ही है या कोई और। जब सुलेमान औरङ्गज़ेब के सामने आया तो इसने इस ख़ूबसूरत शाहज़ादे को ग़ज़ब की

निगाह से देखा। सुलेमान रोपड़ा और दया करने की प्रार्थना की। मगर औरङ्गजेब जैसे ज़ालिम और हत्यारे के दिल में दया कैसी? उसने सुलेमान को ग्वालियर के क़िलेमें बन्द करदिया और बाद को ज़हर देकर मार-डाला। जब दारा और उसकी औलाद का अन्त कर चुका तो औरङ्गजेब ने जिसको कि उसकी खूंखारी के कारण भेड़िया कहना ठीक होगा, अपना खून से भरा मुँह शाहशुजा की ओर फेरा। शाहशुजा बंगाले में था। औरंगजेब की हरकात को देखकर उसने भी लड़ाई की तैयारी की। इलाहाबाद के समीप लड़ाई हुई। औरंगजेब ने नीचा देखा। मगर मीरजुमला ने जो औरंगजेब से मक्कारी में कम नहीं था; शाहशुजा के सेनापति अलीविरदाख़ाँ से साज़िश गांठी, और कहा कि अगर तुम लड़ाई के मैदान में शाहशुजा को हाथी से उतारकर घोड़े पर सवार करादो तो तुम्हारी सेवा की प्रशंसा की जावेगी। जब कि औरङ्गज़ेब की फ़ौज हारकर भागी जारही थी, अलीविरदाख़ाँ ने शाहशुजा के साथ वही मक्कारी की जो ख़लीलुल्लाख़ाँ ने दारा के साथ की थी। शाहशुजा का हाथी पर से घोड़े पर सवार होना था कि तमाम फ़ौज में खलबली पड़गई कि शाहशुजा मारा गया। कहां तो औरङ्ज़ेब की फ़ौज भाग रही थी, कहां अब शाहशुजा की फ़ौज उल्टे पाँव भाग निकली। यह देखकर मीरजुम्ला ने हमला बोल दिया। शाहशुजा के पाँव उखड़ गये,

और उसको जीत की जगह हार मिली। मगर उसने अलीविरदाखां की नमकहरामी का खूबही बदला लिया उसी समय उसको सामने बुलाकर मरवा डाला। शाहशुजा ने कई दूसरे मौकों पर मोरचा बन्दी की, मगर प्रारब्ध ने उसकी सहायता न की। आखिरकार उसको अपनी जान बचा कर अराकान को भागना पड़ा। अराकान के राजा ने उसका बड़ा ही आदर सम्मान किया। मगर बाद में कुछ तो औरंगज़ेब की शाजिशों से और कुछ अपने कर्मों से शाहशुजा मै बालबच्चों के अराकान में मारा गया और इस तरह शाहशुजा के कुटुम्ब का नाम संसार से मिटगया। औरंगज़ेब ने जब सब तरफ़ से इतमीनान होगया तो बड़ी खुशी से अपने नामका सिक्का जारी किया। और उसपर यह शेर लिखा।

सिक्के ज़द दर जहाँ चूं बदरे मुनीर।
शाह औरङ्ग़ज़ेब आलमगीर॥

औरङ्ग़ज़ेब के जंगलीपन की इन्तहा।

गुजश्ता निहायत ही थोड़े से, मगर दुःखमय बयान में औरङ्ग़ज़ेब की खूंख्वारी के कुछ उदाहरण दिये गये हैं, जिनमें उसकाजङ्गलीपन दिखलाया गया है। मगर उसका जङ्गलीपन यहीं तक ख़तम नहीं हो

गया था, बल्कि उसने अपने बाप को कैद में कठिन दुःख दिये। वह उसके नाम ऐसी चिट्ठियां लिखता था जिनको पढ़कर बूढ़ा बादशाह अत्यन्त दुःखी होता था औरङ्गज़ेब उसको अपने खतूत में ज़ानी (व्यभिचारी) कुकर्मी और अन्यायी तक लिखने से नहीं चूकता था। मगर शाहजहाँ भी ऐसे दाँत तोड़ जवाब देता था, कि औरङ्गजेब को पगड़ी सम्भालनी पड़ती थी। ओ ज़ालिम! तूने अपने भाइयों का खून किया, अपने बापको कैद किया, अभीतक तुझको तसल्ली नहीं मिली आदि २; मगर औरङ्गज़ेब को वास्तव में तसल्ली नहीं मिली थी एक दफ़ा शाहजहां सख्त बीमार होगया। हकीमों ने तजवीज की कि आबोहवा बदलना चाहिए और औरङ्गज़ेब से सिफ़ारिश की कि शाहजहां को काश्मीर की हवा मुफ़ीद पड़ेगी। मगर औरङ्गज़ेब इतना दयालु कहां था जो हकीमों की बात को सुनता या अपने बाप के साथ किसी प्रकार की नर्मी करता। बजाय कशमीर भेजने के, उसने उसकी ज़िन्दगी का ख़ातिमा कर देने का पूरा इरादा कर लिया। शाहजहां जिस कमरे में कैद था उसमें एक खिड़की थी जो कि दरिया की ओर खुली थी। शाहजहाँ प्रायः दिल बहलाने के लिए उस खिड़की में बैठ जाया करता था। औरङ्गज़ेब ने हुक्म दिया कि खिड़की बन्द कर दी जावे और उसके नीचे बन्दूकची नियत कर दिए, जो कि हर वक्त बन्दूकें छोड़ते रहते थे, ताकि शोर से शाहजहाँ चैन की नींद

भी न सो सके, साथ ही उसके हुक्म था कि शाहजहां कभी इसमें आकर बैठे तो फौरन उसके गोली मार दो।

क़िले में जितना ख़ज़ाना था वह सब औरङ्ग़ज़ेब ने शाहजहां के सामने निकलवाना शुरू कर दिया। खूब शोर किया जाता, और गुल मचाया जाता, मगर शाहजहाँ भी इन बातों को समझता था। वह भी इसी तरह रहता था कि गोया उसको किसी की परवाह ही नहीं है। औरङ्ग़ज़ेब के आदमी जितना ज्यादा शोर मचाते उतना ही वह अपने गाने बजाने वाली औरतों के नाच रंग को ज्यादा गर्म कर देता था। जब औरङ्ग़ज़ेब ने देखा कि बूढ़ा मरने में ही नहीं आता, तो उसने ज़हर के ज़रिये उसका काम तमाम कर देना चाहा। उसने ज़हर मँगवाया और अपने ख्वाजासारा फ़हीम के हाथ वह ज़हर मय अपनी दस्तखती चिट्ठी के मुकर्रमखाँ के पास रवाना कर दिया। मुकर्रमख़ाँ शाहजहाँ का अपना निजी हकीम था और शाहजहाँ ने उसपर बहुत सी कृपायें की थीं। वह अपने भलाई करने वाले का शुभचिन्तक था। औरङ्गज़ेब ने उसको लिखा कि अगर तुम अपनी कुशल चाहते हो तो फौरन यह ज़हर शाहजहाँ को खिलादो ताकि वह मरजाये। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा। मुकर्रमख़ाँ ने सोचा कि जिस शाहजहाँ ने मेरे साथ नेक बर्ताव किया है, यह कमीनगी और विश्वासघात है कि मैं उसको ज़हर दूँ। बस बेहतर यही है कि औरङ्ग-

ज़ेब ने जो ज़हर अपने बाप के लिये, मेरे पास भेजा है मैं उसको खुदही खालूँ, ताकि मैं वफादार रहकर मरूँ उसने ज़हर खुद खालिया, और आध घंटे के अन्दर मरगया। औरङ्गज़ेब खुश था कि अभी शाहजहाँ के मरने की खबर मुझे मिलेगी, मगर जब उसको पता लगा कि असिल बात क्या हुई है? तो बहुत ही अफसोस किया। इसलिए नहीं कि मैंने कोई बुरा काम किया था, बल्कि इसलिये कि उसका बाप बच रहा। इससे बढ़कर शर्मनाक पितृघात का उदाहरण शायद दुनियाँ मे कोई न होगा। एक शख्स शाहजहाँ से कुछ पारितोषिक पाकर, इसके लिये जान देदेता है। दूसरा इससे जिन्दगी पाकर और इसका बेटा कहलाकर इसकी जान लेता है। औरङ्गज़ेब से बढ़कर कुपूत और कौन होसकता है। वह सिर्फ़ कुपूत ही नहीं था, परन्तु अव्वल दरजे का कृतघ्न (मोहसिन कुश) भी था। इसकी मिसालें कुछ पीछे दिखाई जाचुकी हैं। मगर वह काफ़ी नहीं हैं। औरङ्गज़ेब को अपने भाई दारा पर विजय ख़लीलुल्लाख़ाँ की वजह से प्राप्त हुई थी। ख़लीलुल्लाख़ाँ को भी आख़िरकार ज़हर देकर मार डाला राजा जयसिंह ने जो प्रशंसनीय सेवायें औरङ्गज़ेब की की थीं, वह किसी से छिपी नहीं हैं। यह जयसिंह ही था जिसने औरङ्गज़ेब को जीवन प्रदान किया जबकि उसके सिपाहियों ने उसको मार डालना चाहा था, यह जयसिंह ही था जिसने शिवाजी को

नीचा दिखाया था; यह जयसिंह ही था जिसने शाह-शुजा को हराकर औरङ्गजेब को उसके पंजे से बचाया था; यह जयसिंह ही था, जिसने औरङ्गजेब की खातिर सुलेमानशिकोह की फ़ौज को औरङ्गजेब के हवाले कर दिया था; यह जयसिंह ही था जिसने सुलेमानशिकोह को औरङ्गजेब के सुपुर्द कर दिया था, यह जयसिंह ही था जिसने उस समय, जब कि औरङ्गजेब दुबारा शाहशुजा के हाथ से तंग आरहा था, उसको बचाया; यह जयसिंह ही था जिसने अपनी जेब से रुपया खर्च करके शिवाजी के विरुद्ध लड़ाई करके मुगलों का सिक्का बिठाया। मगर इसी बहादुर जयसिंह को इस दुष्ट अन्यायी, पिशाच्च औरङ्गज़ेब ने ज़हर देकर मार-डाला। राजा जयसिंह की मौतके बाद औरङ्गज़ेब ने हिन्दुओं पर खूब दिलखोलकर अन्याय करने शुरू किये। चूंकि राजा यशवन्तसिंह के दम में दम बाक़ी था इसलिये वह फिर भी किसी कदर डरता रहताथा। संयोग वश उन्हीं दिनों में यशवन्तसिंह का देहान्त हो गया फिर तो औरङ्गज़ेब के अन्याय की कोई हद नहीं रही। उसने यशवन्तसिंह के लड़कों को जबरदस्ती मुसलमान बनाना या जानसे मारडालना चाहा। क्यों कि इसके पास सिवाय मुसलमानी या तलवार के और कोई बीच की चीज़ही नहीं थी। जिन राजाओं ने औरङ्गज़ेब की वफ़ादारी और नम्रता में खून पसीना एक कर दिया, उनके और उनकी औलाद के साथ इस

अकृतज्ञ, बकौल शाहजहाँ मूज़ी खाँ ने ऐसा अन्याय-युक्त बर्ताव किया कि न केवल उनके साथ बल्कि तमाम हिन्दू रिआया के साथ अत्यन्तही अमानुषी वर्त्ताव किया। उसने हुक्म देदिया कि मेरे राज्य में कोई भी हिन्दू मन्दिर न रहने पाये। हिन्दुओं के मंदिर तुड़वादिये गये या मस्जिदों मे बदल दिये गये। बनारस और मथुरा के बहुत से बड़े २ मन्दिर तोड़कर, मस्जिदें बनाई गईं। तमाम हिन्दुओं पर, जिनकी उम्र १४ वर्ष से ऊपर थी, जज़िया लगादिया गया। जज़िया दरअसिल क्या चीज़ थी इसका खुलासा हाल तो हम अगले काण्ड में करेंगे, लेकिन यहाँ हम सिर्फ इतनाही बतादेना चाहते हैं कि यह जज़िया अत्यन्त कठोरता से वसूल किया जाता था। हरएक सौदागर १३॥) हरएक बीच की दशा के हिन्दू को ६।) और हरएक ग़रीब को ३॥। सालाना जज़िया अदा करना पड़ता था। जज़िया इतना कठोर नहीं था जितनी कि वह सख़्ती और वे इज़्ज़ती जोकि इसके वसूल करने में की जाती थी, हिन्दुओं को ज़लील और बेइज़्ज़त किया जाताथा। जज़िया वसूल करने वाले उनकी औरतों को बेइज़्ज़त करते थे। जो कोई अदा नहीं कर सकता था, या तो जेल में भेजाजाता था या मुसलान बना लियाजाता था। करोड़ों आदमी आये दिन की सख़्ती से तंग आकर मुसलमान होगये। हिन्दुस्तान के मुसलमान ज़्यादातर इसी ज़माने के मुसलमान हैं। इन्हीं कठोरताओं के

कारण, न केवल हिन्दूही औरङ्गज़ेब से घृणा करते थे बल्कि मुसलमान भी औरङ्गज़ेब को अच्छा नहीं समझते थे। औरंगज़ेब ने बहुतसा रुपया बतौर नज़राना शरीफ़ मक्के की सेवा में भेजा, मगर शरीफ़ मक्के ने उसको पापी समझकर रुपया लेने से इनकार करदिया औरंगज़ेब ने इस रुपये से लाहौर की आलशान मस्जिद बनवाडाली।
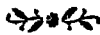
[औरङ्गज़ेब का दूत शाह फ़ारिस के दरबार में]

शरीफ़ मक्केने औरंगज़ेब को घृणा की दृष्टि से देखा। जब शाहजहाँ मरगया, तो औरंगज़ेब ने अपना दूत शाह अब्बास फ़ारिस के बादशाह के पास भेजा, जिस से शाह फ़ारिस के साथ मित्रता स्थापित करे। फ़ारिस के लोग शिया हैं, मगर सुन्नियों के से संकुचित विचार के और द्वेषी नहीं हैं। शाह अब्बास औरंगज़ेब की हरकतों को बतौर एक मुसलमान के बड़ी घृणा की दृष्टि से देखता था। इसने औरंगजेब जैसे भ्रातृघातक और पितृघातक मनुष्य के दूत की कुछ परवा नहीं की। दूतका नाम तरबियतख़ाँ था। जब तरबियतख़ाँ शाह अब्बास के सामने आया तो वह घोड़े पर चढ़कर चलदिया। तरबियतख़ाँ पीछे भागता

रहा। जब एलची (दूत) से बातचीत करने का मौका आया तो शाह अब्बास ने औरंगज़ेब के एलची के सामने औरंगज़ेब की बड़ी निन्दा की, उसको मक्कार कपटी, झूठा, अन्यायी और नीच बताया, और कहा कि शाह फारिस की बदौलत उसको हिन्दुस्तान का राज्य मिला है। क्योंकि अगर शाह फ़ारिस हुमायूँ की मदद न करता तो मुग़लिया राज्यका कहीं पता भी नहीं चलता। यह सुनकर तरबियतख़ाँ ने भी, जो हाज़िर जवाब था, कहा कि आख़िर मुग़लों की बदौलत ही आप को फ़ारिस का राज्य मिला है। क्योंकि अगर तैमूरलँग आप के पुरुषाओं को फारिस के सिंहासन पर न बैठाजाता तो आज आप बादशाह न होते। शाह अब्बास इस उत्तर को सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। इसने हुक्म दिया कि तरबियतख़ाँ को शराब का प्याला बतौर इनाम के दिया जावे। औरंगज़ेब, शराब नहीं पीता था, यही हाल तरबियतख़ाँ का था तरबियतख़ाँ को शराब का प्याला नज़र करना उसका बड़ा अपमान था। मगर शाह अब्बास तो चाहता था कि इसको खूब तंग करना चाहिये, ताकि औरंगज़ेब के पास जाकर शिकायत करे। तरबियतख़ाँको ज़बरदस्ती शराब पीनी पड़ी। इससे पहिले औरंगज़ेब ने भी इसी प्रकार की ज़बरदस्ती शाह फ़ारिस के दूत के साथ की थी वह इस ही का बदला था। शाह अबास तरबियतख़ाँ से अक्सर इसी प्रकार की अपमानयुक्त ठठोली करता

रहा। औरङ्गज़ेबने तरबियतखां के साथ दो आदमी बतौर गुप्तचर के भेजे थे, जो कि तमाम हालत लिखते जाते थे। एक दिन शाह अब्बास ने पूछा कि तुम्हारे साथ यह दो आदमी कौन हैं। तरबियतखांने जवाब दिया कि गुप्तचर हैं जो कि बादशाह ने मेरे साथ रवाना किये हैं। यह सुनकर शाह अब्बास हँसपड़ा कि तुम बड़े मूर्ख और बुरे आदमी हो। औरङ्गज़ेब ने तुमपर एतबार न करके तुम्हारे साथ यह रिपोर्टर भेजे हैं। तुम इनके पदके योग्य नहीं हो। जब दूत की खूब मट्टी खराब की जाचुकी तो एक दिन शाह अब्बासने अपने दरबार में बुलाया ताकि अन्तिम वार्तालाप करके उस को विदा करदे। तरबियतखां की डाढ़ी शरई वज़ की लम्बी चौड़ी थी। शियालोग डाढ़ी नहीं रखते। शाहे अब्बास सूरज छुपनेके बाद तक बातें करता रहा। बात करने के बीच में शाह अब्बास ने तरबियत से बूझा कि तुम्हारे पास औरङ्गज़ेब की कोई तसवीर और सिक्का भी है। तरबियतखां ने एक छोटी सी तसवीर और एक अशरफ़ी निकालकर शाहे अब्बास के सामने पेशकी जिसपर कुछ लिखा हुआ था। चूंकि अँधेरा होचुका था, इसलिए उसने चिराग़ मँगवाकर तरबियतखां से कहा कि ज़रा पढ़ो तो इसपर क्या लिखा है। एक आदमी चिराग़ लेकर खड़ा होगया। शाह अब्बास ने उसको समझा रक्खा था कि जिस

समय तरबियतखां पढ़ने लगे तो तुम फिसलने के बहाने से चिराग़ उसकी डाढ़ी को लगादेना, ताकि उस मोमिन की हजामत हो जावे। तरबियतखां ने मुंहर के ऊपर से यह शेर पढ़कर सुनाया।

सिक्का ज़द दरजहां चुं बदरे मुनीर।
शाहे औरङ्गज़ेब आलमगीर॥

जब दून पढ़चुका तो चिराग़ वाले के पैर कांपे मानो कि वह गिरनेवाला है और झट चिराग़की लौ तरबियतखाँ की डाढ़ी में जा लगी, सफ़ाई होगई। तरबियतखां बिगड़ने लगा, मगर क्या करसक्ता था शाह अब्बासने हँसकर कहा घबड़ाते क्यूं हो, हमारे यहां हज्जाम बहुत हैं, तुम्हारी डाढ़ी का जो नुकसान हुआ है सो भरदेंगे। बाद को तसवीर और अशरफ़ी तरबियतखाँ के हाथ से लेली. उसको देखा और सख्त हिकारत और क्रोध से औरङ्गज़ेबकी तसवीर पर थूक दिया और तरबियतख़ाँ के सामने ज़मीन पर फेंककर अपने गुलामों को हुक्म दिया कि इस तसवीरको जूतों से पीटो, क्योंकि यह ऐसे मनुष्य की तसवीर है जो मानके योग्य नहीं है। अशरफ़ी को देखकर उसने दूत से कहा कि इस पर इबारत ग़लत लिखी है यह इबारत होनी चाहिये।—

सिक्का ज़द दरजहां बर क़ुर्स पनीर।
औरङ्ग़ज़ेब बिरादरकुश व पिदरगीर॥

शाहे अब्बास ने औरङ्गज़ेब की तसवीर और सिक्के के साथ वही सुलूक किया जिस सलूक का कि औरङ्गज़ेब अधिकारी था। दूत अत्यन्त लज्जित होकर फ़ारस से औरङ्गज़ेब के पास पहुंचा। औरङ्गज़ेब बड़ा झुंझलाया, दाँत पीसे मगर क्या कर सक्ता था। हम औरङ्गज़ेब के अन्यायों की नामावली को बढ़ाना नहीं चाहते। ऊपर के थोड़े ही बयान से भलेप्रकार प्रकट है कि औरङ्गज़ेब, जो मुसलमानों के समीप दीनका रक्षक कहाता है और अत्यन्त आदरकी दृष्टि से देखा जाता है वास्तव में मनुष्य कहाने का भी अधिकारी था या नहीं। जिसकौमके सामने औरङ्गज़ेब जैसे भ्रातृघातक, पिता को क़ैद करने वाले दुःख देने वाले, भलाई करने वाले को मारने वाले, अन्यायी, कपटी, जाली, छली मनुष्य उदाहरण के लिए मौजूद हों उस जाति की सभ्यता का अनुमान कर लेना कुछ भी कठिन नहीं है, ऐसे बादशाहों के समय में हिन्दुओं का शैतान न बन जाना वास्तव में एक चमत्कार है। और मैक्समूलर की हैरानी बेजा नहीं है। माना कि हिन्दू शैतान नहीं बन गये मगर उन में से एक बड़ा भारी हिस्सा मुसलमान तो ज़रूर बन गया, यह औरंगज़ेब की यादगार समझना चाहिए।

औरङ्गज़ेबकी मौत ।

अन्त में इस प्रकार का अन्याय, जङ्गलीपन, नृशंसता आदि कठोरता करते यह असम्भव था कि औरङ्गज़ेब की आत्मा को शान्ति मिल सकती; चुनांचे उस की मृत्यु महमूद ग़ज़नवी की मृत्यु से कुछ कम भयानक न थी और दुनिया में इस प्रकार के अन्यायों का अन्त बहुत ही बुरा हुआ है। मरते समय औरङ्गज़ेब की हालत कैसी शोचनीय थी, इसका किसी क़दर अनुमान उन चिट्ठियों से लग सकता है। जो कि उसने अपने बेटों के नाम लिखीं थीं। हम उन में से केवल २ चिट्ठियों का अनुवाद देते हैं। उन में से एक चिट्ठी शहज़ादे आजम के नाम है। और वह यह है।—

खुदा आपको सलामत रक्खे मैं बहुत बूढ़ा और कमजोर होगया हूं मेरे आज़ा सुस्त होगये हैं जबमैंपैदा हुवाथा तो मेरे चारों तरफ बहुतसे-आदमी थे, मगर अब मैं अकेला जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता हूँ कि मैं क्यों पैदा हुआ, और किसलिये इस दुनियां में आया ? मेरी तमाम उम्र ज़ाया होगई, खुदा मेरे दिल में था, मगर मेरी अन्धी आँखों ने उसे नहीं देखा। उम्र थोड़ी है, गुज़िश्ता वक्त वापिस नहीं आ सकता। मुझे जिन्दगी का भरोसा नहीं। हरकात जाती रहीं, महज़ चमड़ा और हड्डियां बाक़ी हैं। मैं खुदा से दूर उफ़्तादा (दूर

फेंका हुआ) हूं । मेरे दिल में बिलकुल चैन नहीं । मैं इस दुनियां में कुछ भी नहीं लाया; मगर अपने सरपर गुनाहों की गठरी ले चला । मैं नहीं जानता हूँ कि मुझे अपने गुनाहों की क्या सज़ा मिलेगी ? गो मैं खुदा के रहम पर भरोसा रखता हूं । मगर मैं अपने गुनाहों पर नादिम हूं" ओह कैसी शोचनीय दशा ! वह औरङ्गज़ेब जिसने मत के पक्षपात से अन्धा होकर, लाखों मनुष्यों का दुःखदिया, धर्मभ्रष्ट किया, जिसने अपने भाइयों का खून पिया, अपने बाप को बुरी तरह मारा, अपने तमाम शुभचिन्तकों को विष दिया, ऐसे पिशाचको अगर मरते समय आराम मिल जाता तो समझो कि ईश्वरीय नियम टूट गया । मगर नियम नहीं टूट सक्ता है । औरङ्गज़ेब जैसा, नराधम, पिशाच, पापी और कुकर्मी मनुष्य स्वयं समूल नष्ट होगया । उसकी दीन-दारी, उसका मतसम्बन्धी द्वेष, उसका पक्षपात उस का कपट उसके जरा भी काम न आये । मालूम होता है कि उसके सब अन्याय सदेह उसके सामने आगये थे चुनांचे शाहज़ादे कामबख्श के नाम जो ख़त लिखा है, उसमें वह लिखता है:—

"मेरी जान की जान ! मैं अकेला जारहा हूं तुम्हारी बेकसी का अफसोस है; मगर अफसोस करने से क्या हासिल ? मैंने लोगों को सतायाहै, जितने मैनेगुनाह किये हैं, और जितना ज़ुल्म किया है, मैं उसका नतीजा साथ लेचला हूँ । अफसोस मैं दुनियाँ में खाली आया

मगर चलते वक्त गुनाहों का बोझा सरपर लेचला। मैंने बहुत गुनाह किये हैं, मालूम नहीं मुझे क्या सजा मिलेगी? यह पारितोषिक (इनआम) था, जो उस दीनदार को मिला था उसका दिल उसको धिक्कार रहा था। वह अपनी दृष्टि में स्वयंही पिशाच और कलङ्कित बनरहा था वह अपने तमाम कुकर्मों पर जो कि उसने धर्म की आड़ में किये थे, लज्जित होरहा था आखिर वह तमाम पापों का बोझ लेकर इस संसारको। एक राक्षस से खाली करगया और शाहजहाँ के कथनानुसार, जिसने इतने मनुष्यों को डसा था, इतने निरपराधियों का रुधिर पिया था, आखिर वह आप भी मृत्यु का ग्रास होगया। उसकी मौत के थोड़े ही काल काल के पश्चात् उसकी बनाई हुई या बिगाड़ी हुई मुगलों की सलतनत भी समूल नष्ट होगई। आज वहां घास फूंस का एक तिनका भी नज़र नहीं आता।

औरङ्गज़ेब और उसके जानशीन।

औरङ्गज़ेब या उसके पुरुषाओं ने मारकाटका पेड़ लगाया था, वह समयपर अपना फल देनेके बिना नहीं रह सकता था। जब औरङ्गज़ेब के अन्यायों का उसकी मृत्यु के साथ अन्त होगया, तो उसका बेटा मुहम्मद मुअ़ज्ज़म तख्त का स्वामी बना उसने भी औरङ्गजेब की तरह अपने दोनों भाइयों को मारडाला। और तख्त के लिये जिस कदर बाकी दावेदार थे, सब का

सर क़लम कर दिया, महम्मद मुअ़ज़्ज़म शाह आलम, चालचलन के लिहाज़ से शाहजहाँ आदि से कुछ कम नहीं था। शाह आलम के बाद उसका बेटा जहाँदार तख्तपर बैठा। उसने भी नियमानुसार अपने भाइयों को मारडाला। मगर संयोग से फ़र्रुख़सियर इस के हाथ से बचगया। फ़र्रुख़सियर ने दूसरे साल ही आगरे के समीप जहाँदार को हराकर मारडाला। फ़र्रुख़सियर के मददगार सैय्यद अब्दुल्ला और सैय्यद हसनअली थे। दोनों सैय्यदों ने बाद में फ़र्रुख़को ही मारडाला। दूसरे अमीरों ने अपनी बारी में इन दोनों सैय्यदों को भी मारडाला। फ़र्रुख़सियर ने सिक्खोंपर अत्यन्त ही अन्याय किये उनको ढूंढ २कर मारा। एक २ सिक्ख के लिये इनाम मुक़र्रिर किया था; मगर सिक्ख भी अपने धर्ममें पक्के थे; मरते थे और उफ़ नहीं करते थे। आख़िरकार मुहम्मद शाह रंगीला जो कि व्यभिचार का अवतार था, तख्तपर बैठा। मुहम्मदशाहके काल में नादिरशाहने भेड़ बकरी की तरह देहली वासियों को काटा। नादिरशाह बड़ा जल्लाद और धोखेबाज़ था और उन गुणों में किसी भी मुसलमान बादशाह से कम नहीं था।

मुहम्मदशाह की अय्याशी का अन्त हुआ तो अहमदशाह का शासन आरम्भ हुआ। पठानों ने फिर हाथ पाँव फैलाये। देहली पर अधिकार करके गुलामक़ादिर ने शाहआलम सानी के बेटे को मार डाला, बादशाह

की आँखें ख़ंजर से निकाल डालीं। आख़िर गुलाम-क़ादिर भी मारागया। शाहआलम दोयम के बाद, इसका बेटा मुईयुद्दीन अकबरशाहसानी तख़्त पर बैठा बाद में सिराजुद्दीन अब्दुलज़फ़र पर बादशाहत का अन्त होगया, जोकि क़ैदी की अवस्था में मरगया। इस तरह सलतनत (राज्य) मुग़लिया समूल नष्ट होगई। जिसके सामने सभी राजा हिन्दुस्तान के कांपा करते थे उसका निशान संसार से मिटगया। हां शाहाने इस्लाम ने अपने चालचलन, और अपने रहनसहन से जो ज़हरीला असर भारतवासियों पर डाला, उसका फल अभीतक लोग भुगत रहे हैं। लखनऊ के नवाबों ने रही सही कसर निकाल डाली और व्यभिचार और कुकर्मों को हद तक पहुंचा दिया। आख़िर वह भी नरक को सिधारे अब क्या बाक़ी है सिर्फ ज़हरीला असर जोकि मुसलमान बादशाह अपनी बदनामी की यादगार में छोड़गये हैं, और बस। ऊपर लिखेहुए थोड़े से वरकों को पढ़कर मैक्समूलर की हैरानी का जवाब काफी मिल सकता है। आखिरकार इसलामी समय में भारत वासी बहुतही गिरे, चुनांचे इस गिरावट के चिन्ह अभी तक बाक़ी हैं और मुद्दत तक बाक़ी रहेंगे। इन चिन्हों का ज़िकर हम अगले काण्ड के लिये छोड़ते हैं। जब कि हम यह दिखायेंगे कि मुसलमानों के इस अन्याय कुकर्म और नृशंसता का कारण क्या था।

इति समाप्त।

पढ़ने योग्य अपूर्व पुस्तकें ।

स्वामी दर्शनानन्द जी कृत
न्यायदर्शन भाष्य १॥)
वैशेषिक दर्शन १॥)
सांख्य दर्शन १)
पातञ्जल योगदर्शन
भोज वृत्ति सहित २)
स्वर्ग में महासभा ।)
स्वर्गमें सबजेक्टकमेटी =)॥
पुराण परीक्षा ।)
भोंदूजाट एक डा० पादरी
साहब का मुबाहिसा ≡)
विवाह आदर्श १।)
६ उपनिषद भाष्य ३)
जीवन ॥)
भर्तृहरि नीति शतक ।)
चञ्चल कुमारी ≡)

जीवन-चरित्र ।

छत्रपति शिवा जी ॥=)
योगीराज म० श्रीकृष्ण ॥=)
हकीकतराय धर्मी ≡)
बैंजमिन फ्रैंकलिन ।॥)
भीष्म पितामह ।=)
स्वामी विरजानन्द जी
सरस्वती =)
मुहम्मद साहब ॥=)
पृथ्वी राज चौहान १॥)
तांतिया भील १।)
हनुमानजी का चरित्र चत-
र्जंगाशिक १॥।)
हिम्मतसिंह =)
शुद्धपाल मनुस्मृति ।–)
सन्तान शिक्षा ॥)
शिष्टाचार सोपान –)
बालसत्यार्थप्रकाश ॥=)
बालबोधनी प्र० भा० =)
द्वि० भा० ।)
तृ० भा० ।=)
च० भा० ॥)
पतिव्रतधर्म –)
घरेलूचिकित्सा ।–
दृष्टान्त समुच्चय १॥)
शुद्धनामावलि ॥)

यवनमत खण्डन की पुस्तकें।

यवनमतादर्श	१)
इस्लाम का फोटू	॥)
मोहम्मद की जीवनी	॥=)
कुरान की छान बीन	।)
यवनमत परीक्षा	।-)
तर्क इस्लाम	।)

इसाईमत की पोल।

इसाईमत परीक्षा	)॥
इसाई विद्वानों से प्रश्न	)।
इसाईमत में मुक्ति असम्भव है	)।
ईसा का जीवन चरित्र	॥)
भारतीय शिष्य ईसा	≋)
इसाई सिद्धान्त दर्पण	।≤)
मौदूजाट एक डाक्टर पादारी साहब का मुबाहिसा	≋)

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

अध्यक्ष—वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद।